द्वितीय अध्याय

रामदेव धुरंधर व्यक्तित्व और कृतित्व

रामदेव धुरंधर जी का जन्म:-- 11 जून 1946−कारोलीन नामक गाँव मॉरीशस में हुआ। उनके परदादा उत्तर प्रदेश बलिया गंगौली से सन् 1858 में मजदूर के रूप में मॉरिशस आये थे तथा मॉरिशस में चौथी पीढ़ी से है। मॉरिशस के पूर्वी प्रांत में पड़ने वाले 'कारोलीन' नाम के साधारण ग्रामांचल में जन्म पा कर निरंतर उम्र की सीढ़ियाँ चढ़ते गए। बाद में इस जगह को छोड़ने की बाध्यता अनेकों बार आई, लेकिन आपके भीतर एक अमूर्त सा संकल्प दिखता था कि रहना तो मुझे यहीं है। आप यहीं से दूर-दूर जा कर पढ़ाई करते रहे। कालांतर में अपने बच्चों को यहीं से कहीं भी पढ़ने के लिए भेजा। आपने अपने इस ग्रामीण मन की गोद में बैठ कर अपने जीवन की धूप - छाँव को जाना है और उसे जीने में कहीं असफल हुआ तो कहीं सफलता ने आपके कदम चूमे हैं। स्वाभाविक था कि आपने आरंभिक लेखन का प्राण-बिंदु आपका अपना परिवेश ही हो। कालांतर में आपके लेखन का परिवेश विस्तृत होता गया। अब तो पूरा विश्व आपकी दृष्टि में होता है। कभी- कभी मानो लगता है कि विश्व से भी आगे ब्रह्मांड में विचर जाते है। जीवन और मृत्यु में आबद्ध सांसारिक मनुष्य होने से यह आपका दूरंदेशी स्वप्न हो सकता है, लेकिन मैं अपने साहित्यकार के लिए इतनी छूट तो ले सकते है।

प्रकाशित उपन्यास:- चेहरों का आदमी, छोटी मछली बड़ी मछली, पूछो इस मोटी से, बनते बिगड़ते रिश्ते, विराट गली के बासिंदे, ढलते सूरज की रोशनी, पथरीला सोना− छः खंड, अपने रस्ते का मुसाफिर. पथरीला सोना सप्तम खंड प्रकाशनाधीन।

कहानी संग्रह:- अंतर्धारा, जन्म की एक भूल, रामदेव धुरंधर संकलित कहानियाँ,

अंतर्मन, विष – मंथन, अपने–अपने जन्म।

व्यंग्य संग्रह:- कलजुगी करम - धरम, बंदे, आगे भी देख ,चेहरों के झमेले, पापी स्वर्ग , कपड़ा जब उतरता है.

नाटक:- प्रवर्तन (नाटक संग्रह)

लघु कथा संग्रह:- चेहरे मेरे तुम्हारे, यात्रा साथ - साथ, एक धरती एक आकाश, आते - जाते लोग, मैं और मेरी लघु कथाएँ संग्रह – 1, मैं और मेरी लघु कथाएँ संग्रह 2 (सर्व जोड़ प्रकाशित लघु कथाएँ 2600)

गद्य क्षणिकाओं की दो पुस्तकें:- गद्य -क्षणिका (एक प्रयोग)छोटे –छोटे समंदर.

रामदेव धुरंधर के लेखन पर आधारित कृतियां:- मॉरिशस लेखक : रामदेव धुरंधर की जुबानी **रामदेव धुरंधर:** साक्षात्कार के आईने में, रामदेव धुरंधर की रचनाधर्मिता रामदेव धुरंधर कृत: पथरीला सोना उपन्यास में भारतीय मजदूरों और उनकी संतानों का यथार्थ चित्रण

साहित्यकार रामदेव धुरंधर : सृजन के विविध आयाम और सम्मान

विशेष सम्मान:- सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन सूरीनाम , उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान – [एक लाख रुपये संलग्न] श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान -- ग्यारह लाख रुपये संलग्न विक्रमशिला विद्यापीठ भागलपुर --- विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि सृजन श्री सम्मान, विश्व हिन्दी रत्न सम्मान, विश्व भाषा हिन्दी सम्मान, अंतरराष्ट्रीय वागेश्वरी सम्मान,श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी सम्मान, विश्व भारती सम्मान, प्रेमचंद कथा सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान, मॉरिशस भारत अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी सम्मान, मॉरिशस हिन्दी रत्न सम्मान, विश्व हिन्दी शिरोमणि सम्मान,

भारतेन्दु हरिश्चंद सम्मान, वैश्विक हिन्दी साहित्य सम्मान, मुम्बई, परिकल्पना श्री कथा सम्मान –ग्यारह हजार रुपये संलग्न आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग प्रेरक सम्मान, रायबरेली विश्व नागरी रत्न सम्मान, देवरिया।

रामदेव धुरंधर का लेखन यात्रा और शिक्षा :-

रामदेव धुरंधर लेखन के अब तक पचपन साल से अधिक हुए। अपने- अपने मन बहलाव के लिए शुरुआती शब्द लिखे है,, लेकिन कालांतर में मैं गहरी समझ और निर्धारित उद्देश्य से लेखन में अपने को समर्पित करने लगे। मैं मानता हूँ उद्देश्य लेखन करते है और आपका लिखा लोगों तक जब पहुँचता है तो उन्हें लगता है अवश्य सोद्देश्य समर्पित भावना से लिखा है। अपना शुरुआती लेखन आज भी स्मरणहै। छोटी छोटी घटनाओं को मैं बड़ा बना कर लिखने का प्रयास करते थे। उसमें नाटकीयता शायद अधिक रहती हो। पर बाद में उन्होंने अपने को बहुत तराशा और लेखकीय चिंतन इस तरह से बनने लगा उनका जीवन लेखन जीवन से हो, न कि बनावटी कल्पना अथवा नाटकीयता से।

आपका मकान गाँव में था। माता - पिता खेतों में काम करने वाले मजदूर थे। भाई में चार, बहन में एक थीं। आप अपने माँ बाप का तीसरे बेटे है। आज दो बड़े भाई नहीं रहे। पर उनका परिवार विशाल है तथा छोटे भाई का अपना व्यापार चलता है। खेती में उसकी बहुत रुचि है। वह अपने तरीके से पैसे वाला आदमी है। उसके बच्चे आपके साथ आत्मीय संबंध रखते हैं। बहन भी बहुत ठीक से है। वे सभी वृद्ध हो गये। जब भी मिलते है। स्वास्थ्य की बातें कुछ अधिक ही करते हैं। रामदेव धुरंधर की दो बेटियाँ हैं। दोनों अच्छी नौकरी पर हैं। दोनों दामाद ऊँचे ओहदे पर काम करते हैं। उनकी बड़ी बेटी का पुत्र इंग्लेंड से वकील बन कर लौटा है। उसने छात्रवृत्ति से अपनी पढ़ाई पूरी की है। परिवार का संयोग ऐसी भी रहा मेरी जो छोटी बेटी कालेज में

अध्यपिका है एवं बेटी ने भी छात्रवृत्ति हासिल की और इन दिनों वह इंग्लेंड में इंजिनियर की कोर्स पूरी कर रही है।

आप अपने शुरुआती जीवन की बात बड़ी स्पष्टता से करता हूँ। मैंने एकशर पढ़ा है। पहले कुदाल थामी। रामदेव धुरंधर के माता- पिता बहुत गरीब थे। इस कारण से वे अपने बच्चों को ठीक से पढ़ा न पाते थे। मैं अपनी बात इस तरह से करता हूँ रामदेव धुरंधर के माता–पिता अपनी परेशानियों के कारण असीम दुलार देने के लिए समय न निकाल पाते थे और उन्हें वह कमी बहुत अखरती हो। वे गरीबी के कारण किशोर उम्र में पढ़ाई के अंतर्गत छुट्टी के दिनों तक मजदूरी की अपनी दुनिया में शामिल कर लेते थे। वह बहुत ही तकलीफ देह उम्र थी। जैसे - तैसे पढ़ाई हुई और एक उम्मीद बन सकती थी। सरकारी नौकरी मिल जाए। कालांतर में नौकरी मिली। जो कुदाल के जीवन से अकल्पित मुक्ति थी। पर वेतन तो बहुत साधारण होता था इस कोण से जीवन यापन में तमाम कठिनाइयाँ आती रहीं। उनकी नौकरी हिंदी से थी अर्थात सरकारी स्कूल में शिक्षक हुआ करते थे। पुलिस की नौकरी के लिए आवेदन भेजा था और बाद नौकरी मिल गयी थी। पर हिन्दी अध्यापन का काम पहले मिल जाने से इसी में रह गया था। मॉरिशस में अंग्रेजी और फ्रेंच दो अनिवार्य भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं में अपनी पढ़ाई की है। यही आगे चलता रहा और एक दिन हिंदी का अध्यापक। जैसा कि रामदेव धुरंधर ने कहा मुझे नौकरी की चाह थी जो मिल गई और समानांतर रूप से मानो हिन्दी लेखन की चिंता ओढ़ ली। जीवन में इस तरह से समाया कि कालांतर में न इससे मुक्ति चाही और न इसने अपनी ओर से मुझे मुक्त किया। बल्कि वे दोनों में एक आत्मिक समंवय आ गया था और आज यह कहने का दम रखता हूँ उन्हें अपने इस जीवन से शिकायत नहीं हो सकती, बल्कि अनंत प्रेम ही हो सकता है।

रामदेव धुरंधर ने लेखन कार्य कैसे शुरु किया? इसके लिए उनके पास अनेक

परिभाषाएँ हैं। घर में एक संदूकची पड़ी होती थी। जिसमें पुस्तकें बंद कर के रखी गई थीं। यह संदूकची अविवाहित भुवन चाचा की थी। वे साधु हो कर घर से गए थे और फिर कभी नहीं लौटे। भुवन चाचा की पुस्तकों की उपयोगिता न होने से उन्हें फेंकने अथवा कहीं स्थांतरित करने के लिए घर में बातें होती रहती थीं। संदूकची को खोला नहीं जाता था, लेकिन कुछ बड़ा होने पर खोला। संदूकची में दीमक तो न मिले, लेकिन उन्हें समझ में आया दीमकों ने उन पुस्तकों पर तो बड़ा ही ध्वंस मचा दिया था। एक दो फटी चिथड़ी सी पुस्तकें निकालने पर शब्दों में शिरोरेखा देखी। समझ में तो आया वह हिंदी है, लेकिन वह हिन्दी आज जैसी हिन्दी नहीं थी। मेरे लिए यह अनबूझ गुत्थी हुई। उनके पिता उनको यह समझा नहीं सकते थे, क्योंकि उन्हें किसी भाषा की साक्षरता आती नहीं थी। पर पिता कहते थे अपने साधु भाई के साक्षर होने का उन्हें गर्व था। बाद में मैंने कहीं से जाना था उन दिनों कैथी लिपि में हमारे यहाँ की हिन्दी होती थी।

उनका कहना है कि अपने भुवन चाचा की उन्हीं पुस्तकों के साक्ष्य में जादुई तरीके से हिंदी की सनक मेरे माथे चढ़ी हो जो प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होती चली गई। पचहत्तर की इस उम्र में भी हिंदी की कोई डिग्री नहीं है। उनके पास जो हिन्दी है वह बैठकाओं से पढ़ी हुई हिन्दी है और ज्यादा से ज्यादा हिन्दी प्रचारिणी सभा लोंग माऊंटेन की पढ़ाई से मेरे प्रमाण पत्र हैं। इसी पढ़ाई से हिन्दी शिक्षण जैसा काम मिलने लायक पास प्रमाण पत्र हुए और आज तक हिन्दी के सफर का मूल बिंदु वहीं से है। हाँ मैं हिन्दी का लेखक हुआ तो इसकी परिभाषा का स्रोत मेरे लिए कुछ और हुआ। वह स्रोत इतना ही है। हिन्दी की तमाम पुस्तकें पढ़ी हैं और भारतीय पत्रिकाओं ने लेखन की मेरी परिभाषा की रही सही कमी की पूर्ति की है।

जैसा कि अपने भुवन चाचा की पुस्तकों से हिंदी का पहला वरदान हुआ उसी तरह हिंदी लेखन में निरक्षर पिता का जाने अनजाने बहुत बड़ा सहयोग रहा। उन दिनों

गाँव से कोई आदमी शहर यानी पोर्ट लुईस जाता था। वहाँ से खास मिठाई खरीद कर अपने परिवार के लिए लाता था। उनके पिता भी ऐसा ही करते थे, लेकिन इसमें कुछ और भी जुड़ा होता था। बैठका में हिंदी पढ़ने वाले अपने बेटे के लिए वे पोर्ट लुईस से धार्मिक पुस्तकें खरीद कर लाते थे। निरक्षर होने से धार्मिकता की पहचान के सूत्र उनके लिए मुखपृष्ठ के राम, विष्णु आदि होते थे।

रामदेव धुरंधर के पिता एक कलम बढ़िया खरीदते थे। पिता की ओर से खरीदी हुई धार्मिक पुस्तकों और कलम के समंवित सहयोग से हुआ कि मन में आने लगा अपनी ओर से भी तो कुछ लिख सकता हूँ। कुछ लिखा हो तो वह भगवान से दया की याचना रही हो, स्वयं अपने जीवन की चलती फिरती बातें हों, प्रेम, घृणा, धर्म, पाखंड आदि की छिटपुट बातें हों जो लिखने पर मुझे लगता हो यह तो मैं अद्भुत लिख रहा हूँ। तो बस अद्भुत का ही भूत मेरे लिए अक्षुण्ण हो गया और बाद में लेखन के प्रति बहुत गंभीरता आने लगी।

मैं समझता हूँ कि रामदेव धुरंधर लेखन शुरु क्यों क्या? इसका प्रमाण मैं यही दे सकता हूँ जिसमें न कोई बनावट है और न ही किसी छल की प्रतिच्छाया है। यह मानो लेखन का शाश्वत सत्य है। जिससे एक बिंदु इधर उधर दरकाने से पूरा ढाँचा चूर हो जाए। पर इस बात का मंथन लंबा चलना चाहिए और इस वक्त वही करने की कोशिश कर रहा हूँ। जैसे रामदेव धुरंधर लेखन शुरु किया हो, चाहे भुवन चाचा की पुस्तकों से प्रेरित हो कर या अपने पिता की ओर से हिन्दी की पुस्तकें और सुन्दर कलम पाने पर, लेकिन सवाल यह हो सकता है क्या उनके लिए लेखक बनना मेरे लिए जरूरी ही था? पैसे के अभाव और जीवन के तमाम संकटों के बीच अपने अतीत को जिस व्यथा से जिया है उन्हें नहीं लगता उसके घेरे में समय का ऐसा कोई कण बचता हो जो बरबस हिंदी लेखन की ओर धकेलता ले जाता हो। पर लेखन की ओर तो गया। वास्तविक

लेखन का एक आधार हुआ। जिससे खास परिचय न होने से भी वह अपने परिवेश से हो कर मेरे अंतस में समाता चला जा रहा था। अपने लेखन की इस परिभाषा को जादुई कहूँगा, लेकिन तकदीर का झोंका भी कहूँ तो उन्हें लगता है सोने में सुगंध तो इसे कहा ही जा सकता है। रामदेव धुरंधर बाइस साल की उम्र में हिन्दी प्रचारिणी सभा लोंग माऊंटेन हिन्दी पढ़ने गया था। पढ़ने वाले सहपाठी पचास साल के भी थे। उन दिनों हिन्दी का वातावरण यही था। हिन्दी प्रचारिणी सभा में व्याकरण की पढ़ाई पर जोर दिया जाता था। यही जान कर वहाँ पढ़ने गया था। इसमें उनका वह लक्ष्य गूंफित था कि सरकारी स्कूल में हिन्दी अध्यापक बनना है। तब तो व्याकरण सम्मत हिन्दी न हो तो रुकावट तो आएगी। उसने 'ने' का प्रयोग वहीं सीखा जो सदा मेरे काम आया।

वहाँ ऐसा हुआ गुरुजी रामदेव धुरंधर जी निबंधों को अव्वल मानने लगे और अकसर कक्षा में कहा पढ़ कर सब को सुनाऊँ। अब पचास साल के सहपाठी हुए तो क्षेपक स्वरूप बहुत कुछ कहने का उन्हें अधिकार हुआ, लेकिन गुरु जी रविशंकर कौलेसर पक्षधरता में डटे रहते थे। वह मध्यमा कक्षा की पढ़ाई थी। पूरे मॉरिशस के लिए वह सब से बड़ी कक्षागत पढ़ाई थी। परीक्षा होने पर पर्चे भारत हिन्दी प्रचारिणी सभा भेजे जाते थे। जहाँ से परीक्षा फल आने में छ: महीने तो कभी साल लग जाता था। कक्षा में निबंध अपनी प्रसिद्धि बनाते थे और क्षेपक स्वरूप कुछ हंगामे भी हो जाते थे। इन सारी परिस्थितियों का प्रतिबिंब वह हुआ 'मध्यमा' परीक्षा का परिणाम आने पर प्रथम स्थान मेरा हुआ। वार्षिक समारोह के अवसर पर डेढ़ सौ रूपए पुरस्कार स्वरूप मिले। उस समय रामदेव धुरंधर विवाह हो चुका था और पैसे के अभाव वाला मजदूर थे। पुरस्कार के उस पैसे से अपने घर के लिए राशन खरीदा था।

हिन्दी लेखन में क्यों? यही पुरस्कार और कक्षा में निबंधों का पढ़ाया जाना ऐसा बिंब हुआ कि लिख तो सकते ही है। बस लेखन का स्वरूप बदल जाता, तब निबंध होते

थे, अब कहानियाँ होतीं। पर कहानियाँ हुईं कैसे इसके पीछे भी मानो एक महान कथा की अपनी एक खास भूमिका थी। शायद तकदीर ही उनके हाथ पकड़ कर हिन्दी प्रचारिणी सभा ले गई थी। वहीं कथा सम्राट प्रेमचंद को उनके उपन्यास गोदान में पाया। महाप्राण निराला, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत इस तरह हिन्दी के तमाम रचनाकार वहाँ मिले और उनमें प्रभावित तो बहुत ही हुआ। यह लेखन का प्राण तत्त्व हुआ, लेकिन लेखन की मेरी सही मंजिल फिर भी बहुत दूर थी। निबंध, मध्यमा परीक्षा प्रथम स्थान, पुरस्कार इसके बाद वह पड़ाव आया। रामदेव धुरंधर सरकारी स्कूल में हिन्दी अध्यापक बनने के लिए आवेदन भेजा। लिखित परीक्षा होने के बाद इन्टरव्यू के लिए बुलाया गया। संयोग से तब 'अनुराग' नाम की स्थानीय हिन्दी पत्रिका में 'प्रतिज्ञा' शीर्षक से एक कहानी प्रकाशित हो चुकी थी। वह उनकी पहली साहित्यिक कहानी थी। सोमदत्त बखोरी जी इसके संपादक थे। इन्टरव्यू के लिए जब मैं इंटरव्यू लेने वाले विद्वानों के सामने बैठा तो मेज पर लाल मुखपृष्ठ की वह पत्रिका देखी जिसमें प्रतिज्ञा कहानी प्रकाशित हुई थी। इन्टरव्यू लेने वाले कुल तीन विद्वान थे भारतीय प्रोफेसर रामप्रकाश, मोरिशस का एक विद्वान और एक गोरा जो अंग्रेजी में प्रश्न करता। इन्टरव्यू के लिए बैठना सहज काम नहीं था, लेकिन सामने में पड़ी हुई उनकी प्रतिज्ञा कहानी ने तो मानो मेरे अस्तित्व को ही सहज बना दिया। वह सुनता था घुस ली जाती है और मंत्रियों की सिफारिश से चमत्कृत होना पड़ता है। खैर जो भी हो, लेकिन मानो उनकी कहानी को घुस अथवा मंत्री की सिफारिश की समकक्षता के अक्स में देख कर रामप्रकाश जी के एक प्रश्न के अंतर्गत कह दिया इस पत्रिका में उनकी कहानी है। अब तक अंग्रेजी के पड़ाव को पार कर दिया था और मानो रामप्रकाश जी के कसाव में फँसा हुआ था। इसके बाद मॉरिशस के विद्वान की बारी आती। पर रामप्रकाश जी ने वह पत्रिका अपने हाथ में ले कर घोषणा कर दी इंटरव्यू पूरा हो गया। रामदेव धुरंधर ने कहा यह कोई 'व्यंग्य' नहीं था। इंटरव्यू के दो दिन बाद उनको तार मिला था और वही चयन हो गया

है। पूरे एक साल में तीस तक लोगों को एकमात्र यहीं से हिन्दी में नौकरी मिलती थी। उस साल असफल हो जाते तो आज उनकी मंजिल कुछ और हो जाती, लेकिन हिंदी नहीं होती।

जब हिंदी रामदेव धुरंधर की मंजिल हुई तो हिन्दी लेखन ने इसमें बड़ी विराटता से अपना स्थान बना लिया। यह स्थान उसे जाना ही था क्योंकि केन्द्र में तो यही था भुवन चाचा की पुस्तकें, पिता की दी हुई कलम, हिन्दी प्रचारिणी सभा के मेरे निबंध, वहीं हिन्दी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में प्रेमचंद से अनुभूति के स्तर पर मुलाकात और प्रकाशित प्रतिज्ञा कहानी।

रामदेव धुरंधर अपने देश के जन जीवन पर लिखते गए और ऐसा भी कि देश उन्हें लेखन की सामग्री देने से कंजूसी करता तो उससे लड़ कर लेता। आज गर्व अनुभव करता हूँ मेरे देश और मेरे लेखन में एक बड़ा ही समन्वित भाव भीना रिश्ता कायम है। यह रिश्ता बाह्य न रह कर साँसों में जिंदा है और बाद में इसे लिखित शब्दों में तो रहना ही है।

सन् 1973 में भारत में पहली कहानी धर्मयुग में छपी थी। इस कहानी का गुजराती में अनुवाद होने पर 'स्त्री' नाम की पत्रिका में प्रकाशित किया गया था। उसी समय भेजी गई थी, लेकिन वह प्रति कहीं खो गई या हो सकता है उसे संभाल कर रखने में से चूक हो गई गई। हाँ, धर्मयुग की अपनी कहानी वाली वह प्रति आज भी सुरक्षित रखी हुई है। उसमें 'वाउचर कॉपी' की मुहर है। इसकी प्रकाशन तिथि है रविवार चार फरवरी 1973. साप्ताहिक और मूल्य 85 पैसे। रविवार को निकलने वाली यह पत्रिका चार दिन में यानी गुरुवार को हवाई डाक से मिल गई थी। उन दिनों दिल्ली से नहीं केवल 'बम्बई' मॉरिशस का हवाई संपर्क होता था।

इस अंक में काका हाथरसी और डाक्टर विवेकी राय की रचनाएँ हैं। उन दिनों वैसी हिन्दी लिखी जाती थी और उसी हिन्दी से सीखते थे। उनकी अपनी लेखकीय भाषा और शैली के लिए आधार तो वही होता था, लेकिन इस बात का ध्यान तो रखना था। यह रचना मेरे देश से होगी। भाषा के मामले में मेरे लिए दिक्कत यह है यहाँ खेतों से संबंधित शब्द फ्रेंच से हैं और जन जीवन में हिन्दी है नहीं। तब तो यह सोचनीय हो मैं खेतों पर आधारित तीन हजार से भी अधिक पन्नों का बहुपृष्ठीय छ: खंडीय पथरीला सोना उपन्यास हिन्दी में लिखते रहे। देश में हिन्दी की ऐसी दीनता तब तो समझा जा सकता है उपन्यास कहानी वगैरह लिखना यहाँ कितना दुरूह होता है। उन्हें लगता है मेरे देश में 'गद्य' में लेखन करना एक असंभव प्रक्रिया है। पर ऐसा भी है असंभव जान कर ही गद्य को अपने लेखन का आधार बनाया है। पहले कवि मात्रिक कविता लिखते थे। एक कविता के लिए मात्रा बिठाने में संभवत: उन्हें एड़ी चोटी का पसीना एक करना पड़ता हो। अब मात्रा का बंधन हट जाने से कवि तो जैसे चाहे कविता में टांग अड़ा लें। एक वाक्य को तोड़ कर दो शब्द ऊपर और एक शब्द नीचे कर लें वह कविता हो जाती है। पढ़ते वक्त उसमें गान जैसी थोड़ी तरन्नुम उड़ेल दें वह और भी खास कविता बन जाती है। कभी कहीं लिखा हुआ पढ़ने को मिला था "हिन्दी की कविता केंचुआ छंद में ढल गई है।"

पहले भी लिखा आज भी संदर्भ के अंतर्गत लिख रहे है। 1976 में मॉरिशस में आयोजित द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी आए थे। उन्होंने अपने सारगर्भित भाषण में कहा था "पता नहीं कहाँ से इतने कवि निकले चले आ रहे हैं।" आश्चर्य नहीं उन्होंने यह व्यंग्य में कहा था। कविता में मात्रा का बंधन टूटने से उसमें एक जबरदस्त स्वतंत्रता आई, लेकिन गद्य में कविता की तरह मात्रा का बंधन टूटने जैसा नहीं हुआ। इसमें अल्प विराम जैसा बंधन न हटने से मेरे लिए यह कठिनाई की

डगर ही है, लेकिन कहने के लिए पास में बनी बनायी भाषा तो यही है गद्य के लिए कठिनता होते भी उसके प्रति समर्पण स्थायी है।

धर्मयुग का प्रसंग होने से एक बात कहना जरूरी हो रहा है। उसमें पहली कहानी प्रकाशित होने पर यू. एस. डॉलर में मॉरिशसीय मुद्रा के हिसाब से लगभग दो सौ रुपए मिले थे। धर्मयुग में दस तक उनकी कहानियाँ प्रकाशित हुईं। सब की वाउचर कॉपी मिलने के साथ पारिश्रमिक मुझे निर्विलंब प्राप्त हो जाता था। आज प्रकाशन जगत में ठेकेदारी करने वालों को बेईमान कहें तो उन्हें मिरची चढ़ जाए। इस बात को यहीं खत्म करता हूँ। ओम शांति। 1973 में ही 'आजकल' के नवंबर अंक में कहानी 'उधर का रास्ता' प्रकाशित हुई थी। संपादक ने उनका फोटो के पास अपनी ओर से लिखा था "मॉरिशस के युवा लेखक रामदेव धुरंधर की यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि मॉरीशस में हिन्दी रचनात्मकता के उस चरण को पहुँच गई है जहाँ साहित्य भावुकता की अभिव्यक्ति न हो कर जीवन की अभिव्यक्ति होता है।" यह प्रति आज भी मेरे पास सुरक्षित है।

1997 में आजकल का मई – जून अंक स्वर्ण जयंती अंक था। उस समय उनकी इस कहानी को स्थान दिया गया था। पचास सालों के बीच जिन रचनाकारों की रचनाएँ इस अंक में संग्रहित थीं उनमें से कुछ नाम यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ –निराला, नागार्जुन, अज्ञेय, महादेवी वर्मा, अमृतलाल नागर, दिनकर, जैनेन्द्र कुमार, सुमित्रानन्दन पंत, विष्णु प्रभाकर, शैलेश मटियानी, [रमेश मटियानी 'शैलेश'] गुलाब राय, भगवती चरण वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त इस तरह से और भी नाम अनेकानेक। उसमें रामदेव धुरंधर की कहानी 'उधर का रास्ता' को स्थान दिया जाना उनके लिए एक विशेष उपलब्धि थी। पर उन स्वनामधन्य लेखकों के बीच होने से स्वीकार भी किया था और स्थान तो उनके चरण में ही हो सकता है।

धर्मयुग में प्रकाशित उनकी पहली कहानी का शीर्षक था 'प्रतिफल।' कहानी का कथ्य इस तरह से है कहानी का पात्र शंकर अपनी पत्नी राधा से धोखा करता है। वह पैसे से सम्पन्न आदमी है, लेकिन पैसे का मतलब उसके लिए ऐयाशी का दूसरा नाम है। पर राधा संस्कारित महिला होने से अपने पति के प्रति श्रद्धा और प्रेम तो रखती है, लेकिन उसमें विखंडन आना शुरु होता है। यह एक विवशता से होता है। उसके पति ने जिस आदमी की औरत को उससे छीन लिया है वह आदमी उसके घर का पता लगा कर वहाँ पहुँचता है और राधा पर अपना प्रभाव डालने की कोशिश करता है। राधा अपने मन में इन्कार बनाये रख कर भी उसके प्रति आकर्षण अनुभव करने लगती है। मन में फिसलन आने से अब उसकी सोच में आने लगता है यह आदमी उसके पति की अपेक्षा सुन्दर तो बहुत है और इसके जिस्म में मानो जवानी की आभा सुलग रही है। राधा आखिर गुमराही में ढल ही जाती है। उसके पति शंकर के लिए यह विडंबना है जिस होटल में वह उस आदमी की औरत के साथ रातें गुजारने पहुँचता है एक दिन देखता है राधा और उस औरत का पति दोनों उस होटल में प्रवेश कर रहे हैं। कहानी यहीं समाप्त हो जाती है।

पर कहानी में रामदेव धुरंधर जी इसी होटल की चर्चा की थी। यह उनकी कल्पना से है। उन दिनों मॉरिशस में टूरिस्ट होटल होते नहीं थे। पर होटल बनने की प्रक्रिया जोरों पर थी। उनका आवास जिधर पड़ता है सात आठ किलोमिटर की दूरी में समुद्र है। 1973 में वहाँ 'टुएसरोक' नाम से एक टूरिस्ट होटल बन रहा था। आज की तारीख में वह पाँच सितारा होटल के रूप में विश्व विख्यात टूरिस्ट होटल है। रामदेव धुरंधर की कहानी 'उधर का रास्ता' जो 1973 में आजकल में प्रकाशित हुई थी उसी होटल के निर्माण से संबंधित कहानी है। वहाँ आस पास में रहने वाले मछुए और तमाम लोग झोंपड़ीनुमा मकान बना कर रहते थे। उन्हें यह कह कर वहाँ से हटाया जा रहा था वह सरकारी जमीन है। पर होटल भी तो सरकारी जमीन पर ही बन रही थी। हाँ जमीन

पर अधिकार की प्रक्रिया बदल दी गई थी। वह प्रक्रिया इतनी ही थी सरकार टूरिस्ट के व्यापार को बढ़ावा देना चाहती थी क्योंकि यह आय का जरिया था।

रामदेव धुरंधर की कहानी उधर का रास्ता में सीता नाम की जो महिला उस समुद्री इलाके में रहती थी उसके सिर पर घूँघट होता है। एक दिन देखा जाता है उसका घूँघट उतर गया है और वह उस होटल का हिस्सा हो गई है। यह तब की उनकी कल्पना थी जो बाद में टूरिस्ट होटलों की बहुतायत से साकार देखी गई है। प्रमाण मैं यह दे रहा हूँ अभी हाल में पुलिस ने रात के वक्त एक वाहन को रोका था। उसमें तमाम लड़कियाँ थीं। पता चला था उन्हें शरीर के सौदे के लिए एक टूरिस्ट होटल ले जाया जा रहा था।

धर्मयुग में प्रकाशित पहली कहानी 'प्रतिफल' से एक संस्मरण जुड़ा हुआ है। यह उनके लिए एक मधुर प्रसंग है।आपके गाँव से कुछ ही दूर फ्लाक नाम के कस्बे में एक मुसलमान अखबार और पत्रिकाएँ बेचता था। वह भारत से अंग्रेजी पत्रिकाएँ मंगवाता था। आश्चर्य एक दिन मैंने उसकी दुकान में धर्मयुग की एक प्रति देख ली। मैंने इसकी बाबत उससे पूछा तो उसने कहा गलती से पत्रिकाओं के बंडल में आ गया है। उन्हें हिंदी प्रेमी जानने से उसने रामदेव धुरंधर को एक प्रति मुफ्त में दे दी। यह 1967 की बात थी। वह प्रति पढ़ने के बाद मैंने उसके यहाँ जाने पर उससे कहा मेरे लिए मंगा सको तो कृपा होगी। अपने लिए एक प्रति की बात कर रहा था और उसने अपने व्यापार को ध्यान में रख कर कहा एक प्रति से उसका काम तो चलेगा नहीं। पर बात ऐसी भी है एक प्रति से अधिक मंगवाए तो खरीदार नहीं मिलेंगे। वह सच ही कह रहा था।

बाद में पोर्ट लुईस जाने पर नालंदा पुस्तकालय गए। रामदेव धुरंधर ने वहाँ धर्मयुग और सारिका की दो - दो प्रतियाँ देखीं। फिल्मी पत्रिकाओं के बीच हिन्दी की पत्रिकाएँ धर्मयुग और सारिका देखने पर उनको अच्छा तो इसलिए भी लगा क्योंकि एक मुसलमान विक्रेता की ओर से धर्मयुग की प्रति मुफ्त में मिली थी जिसे पढ़ने पर

इसका स्वाद जानता था। नालंदा में धर्मयुग और सारिका दोनों के लिए बात की। रामदेव धुरंधर जानते थे कि सारिका में कहानियाँ छपती हैं। तब तो सारिका मेरी आवश्यकता हो गई। उनसे कहा गया वे धर्मयुग और सारिका की दो -दो प्रतियाँ मंगवाते हैं। ग्राहक थे सोमदत्त बखोरी और दूसरे अभिमन्यु अनत। दोनों स्थायी ग्राहक थे। स्थिति समझ लेने पर कहा मैं भी स्थायी ग्राहक बनना चाहता हूँ। मांग स्वीकृत हुई और मैं धर्मयुग और सारिका के अवसान के दुखद समय तक उनसे जुड़ा रहा। ऐसा भी हुआ अभिमन्यु अनत और देश में हिन्दी का अभियान चलाने वाले सशक्त सोमदत्त बखोरी से घनिष्ठ मित्रता बनती चली गई। सोमदत्त बखोरी का अवदान हिन्दी में बहुत है। अभिमन्यु अनत ने साहित्य की दृष्टि से हिन्दी का मस्तक ऊँचा उठाया। हिन्दी के दिग्गज इस देश में तो आज बहुत हैं, लेकिन धर्मयुग और सारिका से संबद्ध तो हमीं कुछ इने - गिने लोग थे।

रामदेव धुरन्धर के उपन्यास:-

छोटी मछली बड़ी मछली:-

उपन्यास यह उपन्यास 1983 ईस्वी प्रकाशित हुआ था। जो कि राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित है। इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण 1989 ईस्वी है। 'छोटी मछली बड़ी मछली' रामदेव धुरंधर का पहला प्रकाशित उपन्यास है। राजकमल प्रकाशन की मालकिन श्रीमती शीला संधु मॉरिशस में आयोजित द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन [1976] में भाग लेने आयी थीं। मैं यहाँ उक्त सम्मेलन के लिए सरकार की ओर से एक नियुक्त कर्मचारी था। शीला संधु जी एक वृद्ध महिला थीं। उनके सात एक तरह पुत्रवत संपर्क हो गया था। बाद में उन्होंने एक पत्र लिख कर कहा था। मेरे पास अपना कहानी संग्रह या उपन्यास हो तो उन्हें भेजूँ। उनकी कसौटी पर खरा उतरे तो वे प्रकाशन के लिए वादा कर रही हैं। मैं समझ रहा था धर्मयुग, आजकल और सारिका में

प्रकाशित मेरी कहानियों की अनुगूँज थी जो शीला संधु जी के पास पहुँचने पर उन्होंने मुझसे संपर्क किया था। मुझे उनके पत्र से बहुत खुशी हुई थी। संयोग से उपन्यास की हस्तलिखित मेरी एक पांडुलिपि तैयार थी। उसका नामकरण तो मैंने लिखने के बीच ही कर लिया था। नाम था 'छोटी मछली बड़ी मछली'। पर प्रकाशन तो मेरे लिए सपना ही था। जो था वह उपन्यास लेखन का एक संतोष था। अब उस पत्र के साक्ष्य में मेरा मनन इस तरह से चलने लगा था उपन्यास लेखन की मेरी तकदीर खुलने जा रही थी और इसका सौजन्य एकमात्र शीला संधु जी को जाता। मेरे मनन में एक प्रश्न भी था कि क्या इस तरह से भी उपन्यास लेखन के लिए मेरा एक संयोग बनने वाला था? मैंने हस्तलिखित पांडुलिपि हवाई मेल से भेजी जिसका उत्तर बहुत जल्द मुझे पत्र से मिला। प्रकाशन के लिए उपन्यास स्वीकृत हो गया था। इस तरह अपनी मेहनत, एक प्रकाशक की उदारता और लेखन की अपनी तकदीर से मैं उपन्यासकार बन गया।

रामदेव धुरंधर के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय:-

चेहरों का आदमी:-

प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर जी का सर्वप्रथम उपन्यास की दृष्टि से देखा जाए तो 'चेहरों का आदमी' एक ऐसा उपन्यास है। जहां पर प्रत्येक आदमी का नकाब समय के अनुरूप बदलता है। इस उपन्यास का प्रकाशन पूर्वोदय प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। जो कि यह उपन्यास भारतीय संस्कृति का परिचय को व्यक्त करती है। एक आदमी अपने चेहरे को गिरगिट की तरह बदलता है। जिसका अस्तित्व भारतीय संस्कृति को समाज में लाने का प्रयत्न करता है। जिस भारतीय जमीनी स्तर से आदमियों को पहचाना जाता है। चाहे वह आदमी मजदूर हो या असहाय मजदूर क्यों न हो? अर्थात सभी को चेहरे वाला आदमी के नाम से संबोधित की जाती है। इसमें किसी भी प्रकार का संदेह नहीं है। चाहे वह कोई गिरमिटिया मजदूरों का बदलता हुआ 'चेहरों का आदमी' उनलोगों को शर्तबंदी के रूप में काम करवाया जाता था। लेकिन इसके बावजूद भी इसी उपन्यास में रामदेव धुरंधर जी ने 'चेहरों का आदमी' जैसे उपन्यास को समाज का परिवर्तित रूप एक नए पायदान पर ले

जाती है। ग्रामीण अंचल पर लिखा हुआ। यह उपन्यास लोगों को कहीं संवेदनशीलता को प्रकट करती है और समाज की पूरी आवश्यकताओं को जब नायक के बीच से उभरता है। तब एक नए नकाब के साथ वे सभी संवेदनाएं झकझोर देती है। रामदेव धुरंधर जी एक कथाकार एवं व्यंग उपन्यासकार होने के कारण कई भागों में विभक्त किया गया है। इसके बजाय उसे एक नई दशा एवं दिशा के रूप में मिलता है। लेकिन कहीं न कहीं 'चेहरो का आदमी' किस रूप में आया और किस रूप में चला गया। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों ने भोजपुरी भाषा को केंद्र में रखकर आगे ले जाते हैं। इस उपन्यास में उन लोगों की कार्य क्षमता के अनुरूप सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालते है। यही कारण है कि श्री रामदेव धुरंधर जी अपनी विशेष लेखन को केंद्र में रखकर बयान करते हैं।

छोटी मछली बड़ी मछली:-

यह उपन्यास रामदेव धुरंधर जी का चर्चित उपन्यास है। जो कि राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास को परिकल्पनात्मक रूप में देखा जाता है। यहां तक कि यह उपन्यास एक व्यंग रूप में प्रतीत होता है तथा सामाजिक संस्कृतियों में एक नया आयाम स्थापित होता है। क्योंकि इस उपन्यास में जब रामदेव धुरंधर जी ने जब से लिखना प्रारम्भ किया। तभी उनके मन में कई विचार आने लगे। इस लिए अभी जितने उपन्यास है। सभी एक अच्छी घटना और ऐतिहासिकता की दृष्टि से देखी जाती है। आज यह उपन्यास यथार्थवाद का प्रतीत है। उन्होंने गिरमिटिया मजदूरों के लिए एक नया परिवेश था। जो आज ढलते हुए सामाजिक परिवेश में भारतीय संस्कृति, रहन-सहन एवं और खानपान की जिक्र मिलता है और वहां की भोजपुरी भाषा को केंद्र में रखकर उन गिरमिटिया मजदूरों के लिए सारी सुख सुविधा होने के माध्यम से कार्य करने के लिए दिए जाते थे। लेकिन पूंजीपति, जमीदारों ने शोषण किया करते थे। यहां तक कि उनके साथ शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था। लेकिन रामदेव धुरंधर जी 'छोटी मछली बड़ी मछली' को उस दृष्टि से देखते है कि इंसानियत का प्रभाव भी छोटे बड़े लोगों को देखकर पहचाना जाता है। समाज में रहते हुए पता लगाया जा सकता है। कौन कितना सामाजिक स्थिति को देखकर जीता है? यह बहुत बड़ी बात है। रामदेव धुरंधर जी कभी यह नहीं चाहते थे कि समाज में वह लाचार लोग जो दिन में काम करके अपने घर लौटते थे कि उन्हें कोई मानसिक रूप से परेशान न कर सके।

पूछो इस माटी से:-

यह उपन्यास नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन नई दिल्ली से 1986 में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विदेशी मिट्टी और भारतीय मिट्टी में एक नएपन की सोच समाज के सामने उभरकर आता है और भारतीय मिट्टी समाज की संस्कृति का आलंबन एवं उद्बोधन की कड़ी है। रामदेव धुरंधर जी इस उपन्यास की भूमिका में कहते हैं कि राजाओं का एक समय था भारत से आने वालों के लिए अन्याय किया जाता था। उस समय न कोई कहने वाला था और न ही कोई विचार मंथन। फिर भी उनके दबाव से प्रत्येक दिन अपने आपको को बहुत ही निष्ठा पूर्वक कर लेते थे। इस भूमिका में रामदेव धुरंधर जी कहते हैं कि शोषक और शोषण का दौर था।जिसमें प्रत्येक पूंजीवादी मील मालिको एवं छोटे बड़े शासकों ने उन गरीबों को मानसिक शोषण के साथ ही साथ शारीरिक रूप से शोषण किया करते थे। लेकिन रामदेव धुरंधर जी ने उन असहाय मजदूरों के लिए पारिवारिक पृष्ठभूमि का जिक्र करते हैं। जो कि परिवार में जिस प्रकार से यातनाएं की जाती थी। आज ऐसे उपन्यास को पढ़ने की जरूरत है। इसके बावजूद रामदेव धुरंधर जी उन भाई-बहन के संबंधों को एवं परिवार के अन्य सदस्यों की मानवीय संवेदना को 'पूछो इस माटी से' जोड़ देते हैं ताकि उन सभी को पता चल सके कि वास्तव में 'पूछो इस माटी से' को पढ़कर ऐसा पता चलता है कि रामदेव धुरंधर जी एक नई कसौटी के साथ संबंध को समाज के सामने ला रखे हैं। यहां तक पारिवारिक पृष्ठभूमि में पति और पत्नी के प्रेम में कोई बेवजह दखल न करें कि वह किसी के साथ इस प्रकार की भेदभाव न कर सके। फिर भी कवल नाम का व्यक्ति उसी परिवार में रहता था। उसके अंदर किसी के प्रति द्वेष की भावना नहीं थी। फिर भी उसके घर में आता है तो यही कहता है कि इस घर में कौन-कौन है? यह सारी बातें कौन जानता था कि एक भाई-बहन का रिश्ता को लेकर समाज में एक नई सोच निर्धारित करती है। पुनः रामदेव धुरंधर जी 'पूछो इस माटी से' पता चलता है कि समाज की अन्य प्रतिक्रियाओं से रूबरू होने के बावजूद सौगंध की कसौटी पर मिलती है। इस लिए यह उपन्यास अपने भारतीय वतन की मिट्टी की खुशबू आज भी मिलती है।

बनते बिगड़ते रिश्ते:-

'बनते बिगड़ते रिश्ते' नामक उपन्यास में रामदेव धुरंधर जी ने इस उपन्यास का प्रकाशन प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है जो कि इस उपन्यास में मारीशस के लोगों से जुड़ना एवं संवाद करना उनकी मान मर्यादा की स्थिति में होती रही। प्रकाशन की दृष्टि से सत्र 1950 ईस्वी में लिखा गया था। इस दौरान रामदेव धुरंधर जी ने ऐसे विधा का समाकलन करने के बाद उन्हें लगा कि ऐसे उपन्यास को मारीशस के ग्रामीण परिवार में निकलना आवश्यक माना जाता है अंततः आते आते इस 'बनते बिगड़ते रिश्ते' 1990 में प्रकाशित हुआ था। जो ग्रामीण अंचल का प्रभावशीलता उभर कर सामने आती है। यहां तक इस प्रकार की उपन्यास में रामदेव धुरंधर जी ने पारिवारिक स्थिति को नजर अंदाज न करते हुए इस प्रकार के संबंधों को स्थापित किया था कि मॉरीशस की भारतीय संस्कृति कहीं न कहीं अपनाते थे। इस लिए ग्रामीण क्षेत्र में कोई त्यौहार हो या बाल पर्व या कोई धार्मिक पाठ पूजा एवं विशेष स्थल को भारतीय रिश्ते को अपनाते हैं। रामदेव धुरंधर जी कहते हैं कि इस उपन्यास में कुछ ऐसी बातें थी। जो विद्यार्थी के सामने अनुकूल नहीं है। इसलिए इस उपन्यास को बेहद छह खंडों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक इस प्रकार रिश्ते के अनुरूप ग्रामीण अंचल को बांटना बहुत मुश्किल थी। फिर भी समाज मे आंचलिक दर्जा देना कोई उपयोग नहीं है। रामदेव धुरंधर जी ने 'बनते बिगड़ते रिश्ते' नामक वृहद उपन्यास है। इस उपन्यास में सुधा नाम की स्त्री की शादी की बात चलती है। लेकिन वह अपने आप में सोचने का प्रयत्न करती है कि मेरे जीवन में कौन सा लड़का आएगा जो कि अपनी पूरी जिंदगी उसी के साथ समर्पित करूंगी लेकिन सुधा के घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण इन सारी अवश्य व्यवस्थाओं से निरंतर प्रस्थान की स्थिति में मिलती थी। एक दिन ऐसा समय आता है कि जिस घर में सुधा आपने निवास स्थान पर रहती थीं। कहीं से उसके पिताजी ने सुधा के लिए रिश्ता ढूंढ ही डालें। अंत में सुधा नाम की लड़की घरवाले गाजे-बाजे के साथ शादी कर दी और इनका जीवन हर्ष उल्लास के साथ व्यतीत होने लगी।

पथरीला सोना:-

इस उपन्यास में श्री रामदेव धुरंधर जी ने छह खंडों में विभाजित किया है। जो कि यह उपन्यास दिल्ली के बुक सेंटर नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इस बुक का

प्रथम संस्करण 2012 में आया था । इस उपन्यास को ग्रामीण मील का पत्थर साबित होती है। क्योंकि इसमें प्रथम भारतीय प्रवासी मजदूरों के मॉरीशस आगमन और यहां जन्मी उनकी संतानों पर आधारित छ खंडों में धारावाहिक हिंदी उपन्यास 1834 से 2014 तक जिक्र मिलता है। इस प्रकार पथरीला सोना भाग दो उन गिरमिटिया मजदूरों का वर्णन किया गया है। जिस राज्य में यूपी और बिहार के मजदूरों को मारीशस में भेजा था। लेकिन मॉरीशस में आगमन होते ही वहां पर गोरे फ्रांसीसी और अंग्रेजों ने मजदूरों को परेशान करते थे। यहां तक कि उन्हें काले रंग कहकर संबोधित करते थे। जिस देश की मिट्टी की सौगंध खाकर मारीशस की धरती पर गए तो प्रत्येक यातनाओं को सहकर काम करते रहे। इसलिए रामदेव धुरंधर जी का उपन्यास तीसरा, चौथा, पांचवा और छठा उपन्यास में पूरा का पूरा गिरमिटिया मजदूरों पर आधारित है। इस उपन्यास में रामदेव धुरंधर ने तीन हजार पन्ने में समेट लिया है। जो कि बहुत ही वृहद और लंबा उपन्यास है। मैं बताना चाहूंगा कि आज रामदेव धुरंधर जी 'पथरीला सोना' को लेकर अगला खंड की जानकारी प्राप्त की तो बोले कि अभी मैं सातवां खंड लिख रहा हूँ। इसलिए यह उपन्यास में गिरमिटिया मजदूररो के लिए जिस भाव संग्रहित करते हैं। वह वास्तव में रामदेव धुरंधर जी के लिए चुनौतीपूर्ण है। इसे मील का पत्थर साबित करना मुश्किल नहीं, बल्कि वास्तविकता के कटघरों में शामिल कर देते हैं। अंत में रामदेव धुरंधर जी ने गिरमिटिया मजदूरों को भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध को सामने लाते हैं। मॉरीशस में रहने वाले यूपी और बिहार के प्रत्येक प्रवासी मजदूरों के लिए प्रत्येक धार्मिक पूजा-पाठ, रहन-सहन एवं खान पान के साथ ही साथ लोकगीतों की प्रधानता मिलती है। कभी-कभी फ्रांसीसी लोगों की घर से रामचरितमानस एवं कई ऐसे महाकाव्य को चोरी छिपके पढ़ते थे। वास्तव में अपनी भारतीय मिट्टी की महक एवं चहल-पहल के साथ आजादी की स्थिति में थी। बल्कि वहां उन्हें शर्त बंदी अर्थात पाँच साल तक उन्हें गिरोह में रखकर काम करवाते थे। जब पाँच साल होने पर उन्हें काम से हटा देते थे। यही सारी समस्याएं प्रसिद्ध समीक्षा एवं कथाकार के रूप में श्री रामदेव धुरंधर जी ने 'पथरीला सोना' महाकाव्यात्मक उपन्यास को लंबे संघर्ष के बाद 1834 से लेकर 2012 तछः खंडों में सरलता पूर्वक पुरा। अभी सातवां खंड प्रकाशाधीन है जोकि रामदेव धुरंधर जी पथरीला सोना को बहुत स्वच्छता पूर्वक लिख रहे है। उनका मानना है इसी सत्र में प्रकाशित हो जाएगा।

ढलते सूरज की रोशनी:-

इस उपन्यास में रामदेव धुरंधर जी ने कड़ी मेहनत किया है। अभी हाल में ही पिछले सत्र में समसामयिक बुक्स नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का पहला संस्करण 2019 में आया था। बल्कि वास्तविक तौर पर देखा जाए तो यह विधा प्रयोगधर्मिता, रचनाशीलता एवं चेतनापरख की दृष्टि से देखा जाता है। यह एक ऐसी रचना है। जो कई रचनाओं को बगावत की स्थिति में मिलती है पुनः 'ढलते सूरज की रोशनी' नामक प्रसिध्द उपन्यास सामने समा जाती है और सूर्य उगने के पहले नई-नई पशु पक्षियों की कोलाहल करने लगती है। इसलिए ऐसे उपन्यास को एक नया उपन्यास कहने में संकोच नहीं होता कि वास्तव में श्री रामदेव धुरंधर जी ने कई उपन्यासों की अपेक्षा 'ढलते सूरज की रोशनी' एक अहम रोल अदा करती है। जो कि मॉरीशस के समकालीन समाज में एक नया बिम्ब समाज में सामने आता है। इस लिए उपन्यास का पर्दाफाश किया गया है। अन्य के अपेक्षा यह उपन्यास एक कथा के रूप में मोड़ लेती है और कार्णिका नामक स्त्री भी चरित्र विधान को छोड़ देती है और किसी के भोग विलास के कारण वह अपने जिस्म को बेच देती है। जहां तक की कर्णिका ने अपनी सारी दुख-दर्द और वेदना को लेकर दुखी रहती है। इसके बावजूद वह खुद अपने आप को भुला नहीं सकती थी तथा इस प्रकार की अवैध व्यापार की मूल्य कथा बुनती रही। कथा में कहीं न कहीं भारतीय लोग निवास करते तो कही न कहीं मॉरीशस के लोग भी निवास करते हैं। यह कहना उचित है कि रामदेव धुरंधर जी ने इन दो देशों के बीच इस प्रकार समेट लिया है कि इस रोशनी को कहीं बुझने नहीं दिया बल्कि डालते हुए शाम की रोशनी कहीं भारत में अस्त होती है तो कहीं मॉरीशस में उग जाता। जैसे देश में फिर भी रामदेव धुरंधर जी ने पूर्व कथा में कर्णिका और प्रबोध की एक प्रेम कथा का वर्णन किया गया है। इस उपन्यास में कर्णिका भले ही बिहार की रहने वाली थी। लेकिन उन्हें कहीं न कही अपनी जरूरतमंद चीजों को लेकर शारीरिक अस्तित्व को खोजें अंत में सारी समस्याएं इस कथा पर सामाजिकता को केंद्र में आते-आते भारतीय और मारीशस में रहने और मानसिक रूप से शोषण होती रही और अंत में वह एड्स की शिकार बन गई। अर्थात श्री रामदेव धुरंधर जी ने 'ढलते सूरज की रोशनी' को वास्तविकता में कुछ खोया तो कुछ पाया की स्थिति में समाज में दिखाई देने लगी।

विराट गली के वाशिंदे:-

'विराट गली के वाशिंदे' उपन्यास को रामदेव धुरंधर जी का व्यंग उपन्यास के नाम से जाना जाता है। इससे यह पता चलता है कि समाज घटित होने वाली समस्याओं को एक दूसरों को न कहते हुए बल्कि व्यंग के रूप में साबित होने लगी। क्योंकि यह उपन्यास 'विराट गली के बाशिंदे' आधारशिला प्रकाशन नैनीताल उत्तराखंड देहरादून से प्रकाशित है और इस उपन्यास में सिंकिया नामक पात्र को पुरुष पात्र के रूप में व्यंग कहता था कि जब भी किसी को कुछ भी कहता था तो उसे लगता था कि वह इन झंझट एवं झगड़ों के बजाय ताना-बाना सुनना बिल्कुल पसंद नहीं थी। बड़ी कमाल की बात है कि भारत से गए पुरुष जो किसी के बातों को व्यंग साबित करती है कि उस दौर के समाज की ऐसी विसंगतियां थी। जहां पर विचारों का आदान-प्रदान न होकर व्यंग साबित होती थी। श्री रामदेव धुरंधर जी ने अपने उपन्यास को व्यंग परक उपन्यास साबित किया है। इस तरह कह सकता हूँ कि श्री रामदेव धुरंधर जी ने जिस प्रकार से 'विराट गली के वाशिंदे' नामक व्यंग उपन्यास में सारी संवेदनाएं व्यक्त की है। ये देश काल एवं समाज के अनुकूल है। ऐसे उपन्यास को पढ़ने की जरूरत है। इस प्रकार की उपन्यास को बिल्कुल निरपेक्षता पूर्वक पढ़नी चाहिए।

रामदेव धुरंधर के उपन्यासों का नाम:-

* चेहरों का आदमी

* छोटी मछली बड़ी मछली

* पूछो इस माटी से

* बनते बिगड़ते रिश्ते

* पथरीला सोना

* ढलते सूरज की रोशनी

* विराट गली के वाशिंदे

प्रकाशक ने अपनी ओर से उपन्यास के संदंर्भ में लिखा था:--

राजनीति किसी व्यक्ति या राष्ट्र का उतना नहीं, जितना अपने समय का दर्शन है। इस सत्य को हम इस उपन्यास की कथा - नायिका विनोदा के चरित्र पर घटित होता हुआ देखते हैं। विनोदा, जो इंग्लेंड से वकालत पढ़ कर आयी है वह अपने देश मॉरिशस की राजनीति में हिस्सा लेना चाहती है। एक ओर उसका रूढ़िग्रस्त पारिवारिक परिवेश है और दूसरी ओर उसकी अपनी अर्जित महत्त्वाकाँक्षाएँ। फलस्वरूप पारिवारिक परिवेश उसे बांध नहीं पाता और निजी महत्त्वाकाँक्षाएँ उसे वहाँ तक ले जाती हैं जहाँ से राजनीतिक भ्रष्टताओं की दलदल शुरु होती है। एक बार व्यक्ति उसमें उतरा तो फिर उससे उबर आने के लिए छटपटा तो सकता है, लेकिन उबर नहीं सकता। एक कोण से विनोदा अपनी निजीगत महत्त्वाकाँक्षाओं के बूते दलदल से आप्लावित उस राजनीतिक परिवेश का हिस्सा हो सकती थी, लेकिन उसे स्वयं पता नहीं था उसके पारिवारिक संस्कार ने उसे अपने में बांध रखा है और वह स्वयं इतने बड़े सत्य से अनजान है। पर सवाल यह था कि क्या पारिवारिक परिवेश ने विनोदा का कोई अहित किया? इसका उत्तर है आघात नहीं किया, बल्कि उसे आगाह किया देश में ऐसी भी राजनीति पल रही है जो एक कारा बनता चला जा रहा है इसे तोड़ सको तो तोड़ कर दिखाओ।

विनोदा का समूचा संघर्ष ऐसा ही संघर्ष है। वस्तुत: वह अपने मॉरिशस देश की उस युवा पीढ़ी की प्रतीक है, जिसके पास नये आदर्श तो हैं, लेकिन सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ से उसका परिचय नहीं है, जिस पर सकारात्मक ढंग से उसे बोया जा सके।

संक्षेप में, मॉरिशस के बहुचर्चित कथाकार रामदेव धुरंधर का यह उपन्यास समाज और उसके वर्तमान अंतर्विरोधों को एक नारी की राजनीतिक महत्त्वाकाँक्षाओं

के संदर्भ में रेखांकित करता है। भाषा की सुमधुरता, नदी की कल कल सी बहती शैली दोनों ने मिल कर इस उपन्यास को पढ़ने का आस्वाद निर्मित किया है और बेजोड़ कथ्य ने इसे जानदार तो बनाया ही है।

शुरु में फ्रेंच की ओर मेरा झुकाव हो रहा था। यह भाषा मेरे देश में बहुत धारदार है और इसके लिए स्वीकृति बहुत बनी होती है। पर मैंने अपने को ढाला तो विशेष रूप से हिन्दी में ही। मेरे लिए हिन्दी मात्र भाषा न हो कर संस्कृति थी, बल्कि संस्कृति जान कर ही मैंने हिन्दी को अपनाया था। बाद में हिन्दी के प्रति जब समझ विकसित होती गयी और मैंने हिन्दी की बहुत सी पुस्तकें पढ़ लीं उस प्रक्रिया में मेरी समझ साहित्य के लिए भी विकसित होती चली गयी। मेरे वातावरण में रामायण संस्कृति के लिए थी तो प्रेमचंद मेरे अपने स्वत्व के लिए साहित्य हुए और मैं उन्हीं की राह चलने की कोशिश करता रहा। रामदेव धुरंधर जी का जहाँ जन्म हुआ था वह उन दिनों गाँव ही होता था, लेकिन अब वह एक तरह से शहर हो गया है। पर उसमें रह कर आज भी अपने को ग्रामीण ही मानते है। यही कारण है कि शहर का चित्रण भी गाँव की परिभाषा से करने लगते है पथरीला सोना उपन्यास गाँव की आत्मा से ही आकार में आया है।

उस समय कहानी लिखना शुरु किया था। अपनी पहली कहानी का शीर्षक 'सूरज' रखा था। यह उनका जीवन के बहुत करीब के कथ्य पर आधारित कहानी थी। तब उम्र सत्रह से अधिक नहीं थी। उम्र ज्यादा परिपक्व न होने से अपनी पहली सूरज कहानी को अधिक धारदार कहने का दम तो नहीं कर सकते, लेकिन उनकी भावी रचनाधर्मिता की वह नींव तो रही। उनके देश में उन दिनों 'नवजीवन' नाम से आठ पन्नों का एक अखबार निकलता था। रामदेव धुरंधर जी ने उसके लिए अपनी यह कहानी भेजी थी और वह बढ़िया परिचय के साथ प्रकाशित हो गयी थी। प्रकाशन का वह पहला अनुभव मुझे बहुत ही आह्लादित करता था।

भारतीय पाठक और रामदेव धुरंधर:-

भारत से बाहर मॉरिशस ही एक देश है जहाँ हिन्दी में व्यापक रूप से लेखन हुआ है। विश्व हिन्दी को इस देश के प्रचलित मुहावरे मिले हैं, लोकोक्तियाँ मिली हैं। यह विश्व हिन्दी के लिए समृद्धि ही तो है। पहले ऐसा होता था भारत से केवल साधु संत यहाँ आते थे और भारतीय शिक्षा में उन्हें प्रवीण करने का अच्छा खासा पाठ चलाते थे। यह बहुत दिनों चला और आज भी चलता रहता है। पिछले दिनों भारत से एक स्वामी ने आने पर अपने संदेश में कहा वे भटके हुए भारतीय वंशजों को राह दिखाने आए हैं। यह बड़ा पिष्टपेषण लगा और वास्तव में यह पिष्टपेषण ही था। मॉरिशस के लोग अब बहुत सयाने हो गए हैं अत: उनसे भटकाव की हालत में रास्ते पर लाने की बात करना बेमानी हो गया है। उनको रास्ता दिखाने की बात करने साधु संत व्यर्थ में यहाँ आते हैं। पर उनकी आवश्यकता हो सकती है बशर्ते वे अपनी भाषा बदलें और भारतीय झूठे गान से अपने को मुक्त करें। अब तो ऐसा भी होता है आशाराम बापू के लिए हमारे मन में शक होने से यहाँ भारतीय साधुपन बहुत हद तक धुँधला सा हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यहाँ मिला भी है। साधु आए तो पैसे पर टूटे और कन्याओं पर उनका मन गया। एक तो गिरफ्तार भी हुआ था। चोर जैसा उसका हुलिया था। पर ऐसों का यहाँ सिक्का जमता भी है। यहाँ के लोग करें भी क्या, इन्हें भारत चाहिए और ये साधु संत अपनी मुट्ठियों में नकली भारत ला कर असली भारत का माया जाल बिछा लेते हैं।

खैर, साधु संत विषय नहीं है। विषय है कि हिंदी साहित्य । इसमें मजबूती से अपना मन तन जमा कर भारतीय पाठकों से चाहता हूँ वे हमें हिन्दी साहित्य का अंग मानें। स्वयं अपनी रचनाओं से उन्हें बहुत दिया है और देना अब भी जारी है। एक भारतीय पाठक ने लिखा था उनकी हिन्दी भारत की हिन्दी से कुछ दूर पड़ती सी

दिखाई देती है। शायद उसका आशय हो भारत में अब भी धोती है और मेरे देश में नहीं होती तो यही भारत की हिन्दी से मेरी पृथकता का कारण बन जाता हो। पर ऐसा हो तो इसे भारत के हिसाब से सुधारना मेरे वश में नहीं है। उन्होंने अपने देश में भोजपुरी को मिला कर हिन्दी सीखी है। उस सीखने में फ्रेंच और यहाँ की प्रचलित कृओल भाषा का भी सहयोग है। भारत से दूर समंदर पार उनकी हिन्दी इतनी बनी और जैसे तैसे इस भाषा में इतना लेखन किया तो स्वयं अपना प्रशंसक हो जाना चाहिए। वास्तव में स्वयं की यह प्रशंसा के लिए झूठ नहीं पड़ेगी। भारतीय मुहावरा है मन चंगा तो कठौती में गंगा। पर यह विडंबना देखिये न यहाँ गंगा हुई और न ही कठौती फिर भी हिन्दी में इसका प्रयोग कर रहा हूँ। पर मैंने अपने देश से जो हिन्दी लेखन में प्रयोग किया है वह आयात न हो कर अपनी जड़ और अपनी पहचान से है।

रामदेव धुरंधर साधु संत के यहाँ आने का जिक्र किया उसी अनुपात से यह जिक्र किया करते थे। यहाँ हिन्दी के लेखक बहु मात्रा में आए। दिनकर, शिवमंगलसिंह सुमन, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, अमृतलाल नागर, मनोहरश्याम जोशी, विष्णु प्रभाकर, जैनेन्द्र कुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी, उपेन्द्रनाथ अश्क, यशपाल, नामवरसिंह, राजेन्द्र यादव गगांप्रसाद विमल। यह लिस्ट इससे भी बहुत आगे जाती है। रामधारीसिंह दिनकर 1967 में यहाँ आए थे। उन दिनों ईख के खेतों मजदूर हुआ करते थे। 1969 में ईस्वी में रामदेव धुरंधर को सरकारी स्कूल में अध्यापक के रूप में नौकरी मिली थी। पर दिनकर जी के सम्मान में गोष्ठी रखे जाने पर रामदेव धुरंधर को बुलाया गया था। पहचान इतनी ही थी कि 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' लोंग माऊँटेन हिंदी में पढ़ने जाता था और 'नवजीवन' नाम के एक अखबार में एक छोटी सी कहानी छपी थी। आश्चर्य ही मानें उन दिनों यहाँ हिंदी में अखबार निकलता था। उस दौर में आठ पन्नों के नवजीवन अखबार का दाम दस सेंट था। पर आज हिन्दी से तथाकथित समृद्ध इस देश का हिंदी में एक भी अखबार होता नहीं है।

रामदेव धुरंधर जी ने दिनकर जी से बात की थी। इसी तरह जितने नाम यहाँ लिखे हैं इन लोगों के आने पर किसी तरह कोशिश करके इनसे व्यक्तिगत तौर पर मिल कर बातें करते थे। यह यह उनका लेखकीय उत्सव ही था जिसे कालांतर में बड़े ही मनोयोग से विकसित किया है।

भारत और मॉरीशस के पाठकों से निवेदन है कि हिंदी का जैसा भी लेखक होता है वास्तव में यही उनकी पहचान है और इसी रूप में स्वीकार करना चाहिए।

भारत से दूर का वासी होने से उन्हें बहुत कम हिन्दी की पुस्तकें उपलब्ध हो पाती हैं। सृजन की कठिनाई के इस प्रश्न का उसी प्रश्न से तादात्मय है। प्रकाशन के लिए तो रामदेव धुरंधर को भारत के प्रकाशकों पर ही आश्रित होना पड़ता है। यह मानो लिए असंभव दुर्ग था। जिसमें प्रवेश करने के लिए स्वप्नदर्शी बन रहा था। प्रकाशन के बहुत से स्वप्न सत्य में परिवर्तित हुए, लेकिन उनके बहुत से स्वप्न ज्यादा सार्थक न हो पाये। रामदेव धुरंधर का सौभाग्य रहा कि धर्मयुग, आजकल, सारिका जैसी लब्ध प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के पते पर कहानियाँ भेजें थे और वे प्रकाशित हुईं। कहानी लेखन से आगे बढ़ कर उपन्यास लिखे और ये भी प्रकाशित होते चले गये। अब नेट के माध्यम से बहुत सुविधाएँ रही होगी। पर एक समय था एक कहानी पोस्ट से भेजने के लिए सौ डेढ़ सौ रुपये का टिकट लगाना पड़ता था। उन दिनों उपन्यास भेजें तो हजार से भी अधिक खर्च उठाना पड़ता था। आज जरूर इस मामले में अपने को थोड़ा हल्का पाते है। लेकिन जब यह संकट था तो बहुत ही था। पुस्तक प्रकाशित हो जाती थी, लेकिन प्रकाशक खर्च करने से बिदकते थे और साल पार हो जाने पर अपनी प्रकाशित पुस्तक का चेहरा देखने को मिलते थे। आज नेट की सुविधा अवश्य उठ रहे है, लेकिन समस्याओं का निदान पूरे रूप से हो गया हो। एक समस्या तो रामदेव धुरंधर के लिए बहुत पीड़ास्पद होती है। उनके बारे में लिखा हुआ पास पहुँचता नहीं है। अभी हाल में

एक मित्र मॉरिशस गया था। वह कमलेश्वर जी की ओर से संपादित एक कृति रामदेव धुरंधर के लिए लाया। उसमें एक कहानी संकलित है और कमलेश्वर जी ने रामदेव धुरंधर के बारे में विस्तार से लिखा था कि वह उसी समय पर नहीं मिला और मिला तो एक मित्र के सौजन्य से तीस साल बाद। इस तरह के उनके साहित्यिक दुख तमाम हैं।

रामदेव धुरंधर को प्रवासी कहा जाता है। जो गले उतरता नहीं है। अपनी जन्म भूमि है। जिसे रामदेव धुरंधर जी नमन करते थे। प्रवासी तो वह होता है जो अपना देश छोड़ कर अन्यत्र जा बसता हो। उनका जन्म इस देश होने से खुद प्रवासी हो नहीं सकता। भारत वंशज हूँ और पीढ़ियों के अंतराल में इस तरह से कहने का दम रखते है। रामदेव धुरंधर खुद मॉरिशस का हिंदी का लेखक मानते है।

भारत की हिंदी की मुख्य धारा से नहीं हूँ, लेकिन विश्व हिन्दी से अपना गहरा संबंध मानते है। जिस देश का भी हिंदी लेखक हिंदी को पुष्ट करने के लिए लिख रहे हो। उनको गर्व होता है हिंदी की मुख्य धारा की एक हस्ती के रूप में स्वीकार किया जाता है। अनेक बार विश्व हिन्दी लेखक के रूप में सम्मानित किया गया है। उनकी रचनाओं पर लोग शोध करते रहे हैं।

रामदेव धुरंधर के बीते कल के यादगार पल:-

मैंने लिखना जैसे भी शुरु किया हो, शौक से या बस यूँ ही हाथ में कलम होने से, अब पीछे पलट कर उसे ढूँढ पाना मेरे लिए सहज नहीं रहा। इसकी आवश्यकता प्रतीत होती भी नहीं है। लिख कर पन्ने समेटते जाने से वह मेरे लिए अनमोल होता गया होगा और उसके साथ जीने की मुझे आदत पड़ने लगी। प्रारंभिक लेखकीय दौर कच्चा और अनगढ़ रहा होगा, लेकिन लिख रहे थे और लिखने की प्रक्रिया में मन कह रहा हो बड़ा काम कर रहा हूँ, यह मेरे लिए अनमोल होता होगा। मेरे स्मरण में इतना अवश्य है। अपने घर के आंगन में आम के पेड़ के नीचे बैठा था और पक्षी डालियों में गा रहे थे।

तब तो उन्होंने पक्षियों पर ही एक कहानी लिखने की ठान ली थी। कहानी तो लिखी और उन में किसी पक्षी को मरा न देख कर भी लिख दिया, एक नर पक्षी मर गया था और एक मादा पक्षी उस के लिए विलाप कर रही थी। उन पक्षियों में मादा पक्षी तो बहुत होंगी। मात्र एक मादा पक्षी आँसू बहा रही थी तो वही मृत नर पक्षी की प्रेमिका होगी। वाल्मीकि के प्रसंग में आता है उन के साथ पक्षियों की घटना जुड़ गई थी जिसे संसार क्रौंच - वध से जानता है। वाल्मीकि को रामायण लिखनी थी जिस का क्रौंच - वध से निर्धारण हो गया था। पर रामदेव धुरंधर स्वयं नर पक्षी को मारा और मादा पक्षी को रुलाया, आखिर यह मुझे कहाँ ले जाने वाला था? यह जहाँ जैसे भी ले गया हो, एक बात तय है मेरे भीतर विश्वास पैदा होने लगा था 'कल्पना' से लिखने की मुझ में कुछ - कुछ सामर्थ्य तो है। कल्पना का यह विश्वास कालांतर में मेरे बहुत काम आया, जिसे मैंने उद्देश्यपरक लेखन कहने का दम कर लिया और यही मेरे साथ निभता चला आया है। उन्होंने जहाँ तक अपने प्रारंभिक लेखन से स्वयं को जाना है आपको इस तरह कहना सही जान पड़ता है मनुष्य के अंतर्मन से ले कर उस के जीवन की बाह्य आवश्यकताओं को शब्दबद्ध करना मेरे लिए लेखन था। बाद में मालूम हुआ था यही तो लेखन होता है। अर्थात सही रास्ते पर था, बस उस में निखार अपेक्षित थी। निखार के लिए कोई विद्यालय या गुरु होना ज़रूरी नहीं था। बल्कि जो होना था उस का सरोकार अपने अस्तित्व से था। यदि उनका अस्तित्व लेखन के योग्य साबित हो सकता है और आप लेखन को एक सार्थक कर्म मानने के लिए भावना तराश सकूँ, तभी इस में टिक सकता हूँ। पचास साल से अधिक हुए जब से मैं अपने को लेखन में समर्पित करता चला आ रहा हूँ। उनके मन में के किसी कोने में अब तो बहुत गहरे पैठा सा हो गया है। यह त्याग - तपस्या का रास्ता था। मैंने इस तपोनिष्ठ रास्ते पर चलने का साहस किया और आज पीछे मुड़ कर देखूँ तो मेरे शब्द कहते हैं। आगे भी चलते जाओ और इसी तरह शब्दों का रेला बिछाओ। तुम ने अपनी नियति यही तो बनायी है। विशेष कर अब

न लिखो तो और क्या काम तुम्हें करना है? नौकरी से अवकाश ले चुके हो और घर पर कोई काम होता नहीं है। बच्चों का अपना जीवन है, वे जी रहे हैं और वे तुम से कुछ पाने के लिए तुम्हें परेशान नहीं करते। यही अवसर है, अच्छा लेखन करने से छूट गया हो तो अब से भी इस के लिए प्रयास तो कर ही लो। अच्छे लेखन का आदर्श तो यही है वही छूटा होता है जिसे लिखने के लिए जीवन पर्यंत तड़प बनी रहती है।

लोगों ने अकसर रामदेव धुरंधर का साक्षात्कार लिया है और उन्होंने यथा संभव उन के प्रश्नों के उत्तर किये हैं। उनका अपना जो अनपूछा छूटा हो और कभी पूछा जाने वाला न हो उसे स्वयं जुबान दे कर अकसर अनावृत्त करता हूँ। कोई आपसे से नहीं पूछता क्या आपने कभी मृत्यु का एहसास किया है? किसी ने प्रश्न नहीं किया क्या कभी कोई जघन्य पाप किया है? यह भी अनपूछा हुआ क्या वे कभी कोई बड़ी चोरी की है? कोई न पूछे, लेकिन स्वयं के कटघरे में इस तरह के अपने तमाम प्रश्न हो सकते हैं। स्वयं में प्रश्न बन जाना चाहता हूँ और उत्तर की काया तो निश्चित ही अपनी होती है। प्रश्नों का घेरा चक्रव्यूह जैसा हो, जिस से निकलना मुश्किल हो और वैसे में मेरे लिए एक ही विकल्प शेष हो, अपनी दुखती रगों तक पहुँच जाऊँ और उसे किसी तरह खंगाल कर उत्तर की आपूर्ति कर सकूँ। प्रश्न अपने हों तो अपने प्रति क्रूर और निर्मम बनने की गुंजाइश बहुत होती है। अब तक जो लिखा उस के लिए बाहर से प्रशंसा आने पर आत्म तुष्टि तो मिल जाती है, लेकिन जो न लिखा उस का अवसाद तो एक मैं ही जानता हूँ। पढ़ने से जो छूट गया वह अब से भी पढ़ने की चाह बनती है कि नहीं? बेकार लिख कर पढ़ने के लिए लोगों को परोस दिया या ऐसा भी लिख डाला जिससे लेखन – कर्म स्वयं आहत होता हो। मेरी ऐसी भूलों के लिए कोई मुझे थप्पड़ न मार सके, लेकिन वे स्वयं को मार कर स्वयं से पूछ तो सकता हूँ चोट की अनुभूति कर रहा हूँ कि नहीं? उनको लगता है भगवान उनसे कहता है एक संपूर्ण मनुष्य न होता तो अब से भी संपूर्ण मनुष्य

बन जाऊँ। लेखन से अच्छे समाज की कल्पना करता हूँ, लेकिन स्वयं उस अच्छे समाज की सदस्यता अब तक स्वीकार न की हो तो जीवन के रहते स्वीकार तो कर लूँ। मेरे अनजाने में किसी प्रकार का कोई शिखर माथे पर तन गया हो और जानता होऊँ ऐसे शिखर के योग्य मैं तो होता ही न हूँ, तो यही वक्त है उस तथाकथित शिखर को अपने माथे से उतार फेंकूँ और अपनी समतलता में लौट आऊँ। ऐसा अनुभव करता हूँ, लिखते जाने की प्रक्रिया में मेरी सोच में गंभीरता आना चाहती है और इस की सार्थक परिभाषा मनुष्यता ही हो सकती है। रामदेव धुरंधर दो - चार पुस्तकों का लेखक मात्र होने से दावा नहीं कर सकता भविष्य को एक चिंतन दे सकता हूँ। परंतु इस धरती पर मेरे अपने तो रहेंगे और इस कोण से मेरी सोच विस्तार पा कर वहाँ पहुँच जाए, मेरे अपने तभी सुखी हो सकते हैं जब उन्हें अच्छे पड़ोसी मिलें। पड़ोसी अच्छे मिलें तो देश, गाँव शहर भी अच्छे मिलें, तभी या किसी के भी परिवार के सुख का संसार बड़ा हो सकता है। इतने भविष्य की कामना तो कर ही सकता हूँ।

रामदेव धुरंधर के लघकथाओं पर कुछ प्रतिक्रियाएँ :-

विद्वान जयप्रकाश कर्दम जी ने फेसबुक में मेरी लघुकथाएँ पढ़ने पर लिखा था धुरंधर जी आप लघुकथा सम्राट कहा है। परशुराम पाण्डेय जी ने मेरी एक लघुकथा के उपलक्ष्य में लिखा --"बड़े भाई, लघुकथाओं में इतनी अनुभूति भर देना ..... देखने में छोटी लगे घाव करे गंभीर वाली बात है जो आपकी लेखनी से ही संभव है। पढ़ने अनुभूतियों में नहीं बांध पाता रहा हूँ। साधुवाद बड़े भाई साहब।"(1)

रामबहादुर मिसिर जी ने लिखा:- मिथकीय संदर्भों को रेखांकित करने वाली कहानियों विशेष रूप से लघुकथाओं के आप विशेष रूप से विशेषज्ञ हैं।

कीर्तिवर्द्धन अग्रवाल ने लिखा – कुछ विशेष है आपके लेखन में। यूँ ही तो कोई धुरंधर

नहीं बनता। करना पड़ता है स्वाहा स्व को, यूँ तो कोई देव, राम नहीं बनता। (2)

महेन्द्र कुमार जी ने लिखा – भौतिकतावाद संस्कृति की बाजारवादी व्यवस्था के मौजूदा दौर में आप जैसे कलमकार ही संवेदनाओं को जीवंत रखने का काम कर रहे हैं। आपका यह सुकृत आपको अमरत्व की ओर ले जाता है, क्योंकि आप अपनी रचनाओं में हमेशा जीवित रहेंगे और लोग आपकी रचनाएँ पढ़ने पर प्रेरणा ग्रहण करते हुए आपको याद करते रहेंगे जैसे आज हम मुंशी प्रेमचंद को श्रद्धा से याद करते रहते हैं। आपकी लंबी उम्र के लिए मंगल कामनाएँ। (3)

राजनाथ तिवारी जी ने लिखा – हमें आप पर गर्व है। हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए आपका योगदान चिर स्मरणीय रहेगा। आपकी लेखनी हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। मनुष्य क्या है? कैसे आगे बढ़े और बेहतर बने? कैसे संवेदना जाग्रत हो? क्या लिखें और क्या न लिखें? साहित्य आखिर है क्या? और भी अनेक प्रश्नों का उत्तर आपके साहित्य में मिलता है। हम भारतवासी आप पर गर्व करते हैं। (4)

गंगा प्रसाद शर्मा जी ने लिखा – आपकी इंसानियत आपके बेहतर सृजन का हेतु है और आपका साहित्य इंसान को इंसान से जोड़ने का प्रमुख सेतु है। रामदेव धुरंधर बंधु, आप खुद भी भारत और मॉरिशस के मध्य एक सेतु हैं। लघुकथा में आपकी अमरता निश्चित है जैसे कि कहानी में प्रेमचंद की अमरता।(5)

राजनाथ तिवारी :-

पथरीला सोना!

किस ने लिखा पथरीला सोना?
खोजो जग का कोना-कोना!

धीर धुरंधर राम देव हैं!
काव्या-रतिका-कामदेव हैं!

मारीशस के स्वर्ण रत्न हैं!
हिंदी-भाषा-मूर्त-यत्न हैं!

बहुविधि लेखक क्षणिका-ज्ञाता!
सूक्ष्म दृष्टि रसमय विज्ञाता!

धर्म-मूल्य,के कुशल चितेरे!
कर्म-योग-विज्ञान घनेरे!

भोजपुरी मजदूर कहानी,
देश-मरीचा पड़ी निशानी!

दर्द भरा है विकल फसाना!
पथरीला सोना का बाना!

अपने ही थे रक्त-सम्बन्धी!
अंग्रेजों की दृष्टि थी अंधी!

जलयानों से दूर ले गए!
एकाकी जिंदगी दे गए!

कितने वीर हमारे पूर्वज!
पंक-पंक में बन गए नीरज!

कौन कर्म को मार सका है!
जो भी उलझा वही थका है!

समय बदलता है पल-प्रति-पल!
हर प्रश्न का होता है हल!

सूरज अस्ताचल को जाता!
वही सुबह उदयाचल आता!

देखा है जीवन की सरिता!
क्षुब्ध,प्रफुल्लित,जैसे वनिता!

सूर्य चंद्र को भी ग्रह लगता!
मानव क्यों रो-रो कर मरता!

कर्म प्रधान जगत विख्याता!

कर्म सकल फल का है दाता!
एक अंश भी नष्ट न होता!
आज नहीं तो कल है मिलता!
काल नहीं है अपने बस में!
समय नष्ट न करो बहस में!
संघर्षों का उपन्यास है!
"पथरीला सोना" प्रकाश है!
आलस-विमद-अंधतम नाशक!
बुद्धि-विवेक-विराग प्रकाशक!
कभी हुए थे जो गिरमिटिया!
घूम चुका है रथ का पहिया!
हर पत्थर होती चिनगारी!
उत्पीड़न से करती रारी!
सभी वर्ण में एक जीव है!
जीव नहीं,वह शिव है!शिव है!
जिस दिन जीवन से टकराता!
उस दिन उसे पता चल पाता!
टक्कर ही जीवन देता है!
आरक्षण मृत-वन देता है!
श्रम जीवी के पुत्र धुरंधर!
लेखन से करते अभयंकर!
पढ़ लोगे जो उनकी क्षणिका!
विस्मृत कर दोगे नभ-गणिका!
जो यह मेरा काव्य पढ़ेगा!
मारीशस की ओर बढ़ेगा!
मित्रों!अपने पूर्वज जानो!
उनकी गाथा को पहचानो!
मारीशस वासी सुन लेना!
अपना सोना मत खो देना!(6)

राजनाथ तिवारी:-

पथरीला सोना, विश्व प्रसिद्ध हिंदी उपन्यास,लेखक श्री राम देव धुरंधर, मॉरीशस।भगवान श्री कृष्ण ने गीता में अर्जुन से कहा! पार्थ! तुम स्वयं से स्वयं का उद्धार करो।अपने को पतनशील मत बनाओ।व्यक्ति ही अपना मित्र व शत्रु होता है। आपने कृष्ण के उपदेश को साकार किया है।

इस धरती पर जन्मकाअर्थ सिद्किया है। धरती के लोग वेदव्यास वाल्मीकि, कालिदास, प्रसाद, निराला, तुलसी आदि की तरह आप के भी ऋणी रहेंगे और आप के इस उपन्यास से जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।कल लोग, आज के लाखों पूंजीपतियों को भो भूल जाएंगे, लेकिन श्रीरामदेव धुरंधर को याद रखेंगे। व्यक्ति का जाति, धर्म, लिंग, सम्प्रदाय, लेखनी, संस्कार, उसे सर्वपूज्य बना देती है। आग का मूल्य होता है, राख का नहीं। अब यह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह आग बनता है या राख।मुझे खेद है कि अभी तक केवल ,पथरीला सोना,उपन्यास प्रथम खण्ड का कुछ भाग ही पढ़ सके।मैं जानता हूँ कि जब तक सभी 06 खण्ड नहीं पढ़ूँगा, आप का व्यक्तित्व नहीं समझ सकूंगा। पढ़ूँगा जरूर। आप को प्रणाम आदरणीय श्री राम देव धुरंधर जी। आप ने मॉरीशस में रहकर,भारत से गये हमारे पूर्वजों,गिरमिटिया मजदूरों का नाम रोशन कर दिया।

किसी कौम को नतमस्तक, होने की नहीं जरूरत है,
आज नहीं तो कल कोई,ध्रुव तारा बन कर निकलेगा।
बस एकाग्रमना होकर तुम,काल-पुरुष से युद्ध करो,
यदि तुमको न विजय मिली तो,तेरी संतति जीतेगी।
देर भले हो जाये ईश्वर घर में है अंधेर नहीं,
ऐसी कोई रात नहीं है,जिसका प्रातः हुआ नहीं।
मानव से बढ़कर धरती पर,जीव नहीं पाया अबतक,
छेनी और हथौड़े से चट्टानों को भी चूर्ण किया। (7) दिनांक 29 - 7 – 18

राजनाथ तिवारी को बहुत बहुत बधाई। रामदेव धुरंधर उन पर गर्व है। हिंदी भाषा और साहित्य के लिए आप का योगदान चिर स्मरणीय रहेगा।आप की लेखनी हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।मनुष्य क्या है?कैसे आगे बढ़े?कैसे और बेहतर बने?कैसे संवेदना जाग्रत हो?क्या लिखें?क्या न लिखें?साहित्य आखिर है क्या?इसे क्यों जीवन का अंग बनाना चाहिए?दर्शन क्या होता है?दर्शन का साहित्य से क्या सम्बन्ध है?और भी अनेक प्रश्नों का उत्तर आप के साहित्य में मिलता है।आप का 06 खंडों में लिखा उपन्यास पथरीला सोना सबको पढ़ना चाहिए।आदरणीय श्री राम देव धुरंधर जी,आप को सादर

प्रणाम करता हूँ। आपके दृष्टि बोध को मैं प्रणाम करता हूँ। आप सामान्य लेखन नहीं, विशेष लेखन करते हैं। आपके लेखन में जीवन व् दर्शन, दोनों मुखर हो उठता है। इस लिए आप मेरे लिए आदरणीय हैं। इस रचना के पीछे का उद्देश्य मेरे विचार से यही है कि सांसारिक भौतिक सुख की अपेक्षा जीवन अधिक महत्वपूर्ण है।जीवन का आनंद अल्प सुख में ही मिल सकता है,न कि असीमित सुख में। इस लिए असीमित सुख के पीछे दौड़ना मूर्खता है।
आप असली भारतीय हैं।

गोवर्धन यादव -- मारीशस के प्रतिष्ठित साहित्यकार- कवि ,लेखक, उपन्यासकार, मेरे मित्र श्री रामदेव धुरंधराजी को उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से एक लाख रुपयों की सम्मान राशि देने की घोषणा हुई है. इस शुभ समाचार को आपने मुझसे फ़ेसबुक पर साझा किया है. आपको मेरी ओर से, श्री नर्मदा प्रसाद कोरी की ओर से तथा मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जिला इकाई के समस्त सदस्यों की ओर से हार्दिक बधाइयां-शुभकामनाएं. हमें खुशी हैं इस बात की कि सुदूर देश में, हजारों मील दूर रहकर भी आप हिन्दी के उन्नयन और प्रचार-प्रसार में अपनी भागीदारी का बखुबी निर्वहन कर रहे हैं. क्या यह कम प्रसन्नता की बात है कि आपके दिल में हिन्दुस्थान धड़कता है. आपका हिन्दी के प्रति सम्मान-लगाव और रचनाकर्म को रेखांकित करते हुए ही संस्था ने आपको सम्मान का हक्दार बनाया है. हम सबकी ओर से आपको पुनः हार्दिक बधाइयां-शुभकामनाएं

मेघसिंह मेघ :- आदरणीय आप माँ हिंदी के सच्चे वरद सपूत हैं। आपने हिंदी जगत के लिए इतने बृहद पैमाने पर जो सर्जन कार्य किया है वो अपने आप में हिंदी जगत के लिए अमर योगदान है । इस महा उपन्यास पथरीला सोना (पुरे 6 खंड) के सृजन में आपने जो सृजन- प्रसव पीड़ा उठाई होगी उसके लिए हम हिंदी साहित्य जगत के सभी साहित्य प्रेमी सदैव आपके एवम् आपके लेखन कर्म के ऋणी रहेंगे। मैंने पहले इस उपन्यास के तीनों खण्ड अपने पास संजो रखें हैं । प्रथम खण्ड को पढ़ रहा हूँ अभी। बहुत ही मर्मान्तक सृजन है । आदरणीय धुरंधर जी को शत् शत् सादर नमन।
आज के 4,5 एवम् 6 खण्ड को भी अपने कम्प्यूटर पर अवतरित कर लिया है। हम आपके अति आभारी हैं । ज्यों ज्यों इन खण्डों को पढ़ूंगा , आप और आपका मोरिसश मेरे अन्तःकरण में उतरता रहेगा। (8)

अखिलेश सिंह:- अच्छा लगता है आप की क्षणिकाओं में जन्म ले रहे कबीर से मिलकर। आप ने बड़ी निरभीकता और निष्ठा के साथ बयान किया है कि दुनिया का हर धर्म आदमी के साथ छल करता है गौ हत्या का पाप या आदमी का खतना सब धूर्तपना

है आज के आदमी को आदमियत वाला धर्म चाहिए। मुझे हर्ष कि आप इस निर्णय तक पहुँचे।(9)

गोवर्धन यादवस:- मैंने भी मानस बनाया था कि कम से कम एक उपन्यास लिख डालूं, लेकिन हिम्मत जवाब दे गयी.....कितने सारे घुमाव और मोड़ के बाद एक मुकम्मल उपन्यास बन पाता है, आप का पथरीला सोना देखकर यह ज्ञात हुआ......... महीनों क्या पूरा साल ही इसमें लग गया होगा आपको अनेकानेक बधाइयां.(10)

जगदीश प्रसाद जेंड:- गागर में सागर भर कर परोस दी हैं गद्य क्षणिकाएँ रामदेव धुरंधर जी ने। उत्कृष्ट सृजन के लिए बहुत-बहुत बधाई!(11)

मोहन पाठक :- हार्दिक बधाई और शुभकामना आदरणीय , युग युगों तक हिन्दी का परचम आपकी रचनाओं के माध्यम से फैलता रहेगा ऐसा मेरा विश्वास है।(12)

हरेराम पांडेय:- वाह महोदय आपके लेखन से परिचित हो के एक नई ताजगी का एहसास हो रहा है। आपकी लघु कथायें बड़ी तीक्ष्णता से मानवीय संवेदनाओं को उकेरती हैं नमन हैं आपके साहित्यिक अवबोध को। बधाई धुरंधर जी|(13)

किशोर अग्रवाल:- परदेश मे अपना देश बसाकर अपनी भाषा व भावों में आज भी वही सुगंध बचाकर रखी है आपने। यहां तो सब छिज भिज गया। काश आपकी तरह हम भी थोड़ा सा किसी और आईलैंड पर ले जाकर बचा पाते। (14)

कुमार शैलेन्द्र:- ग्राहम की नानी की बेबस कहानी, आप जैसे धुरन्धर शब्द शिल्पी की जुबानी, वाह..., सचमुच, श्रेष्ठ कल्पनाशीलता में आबद्ध गद्य क्षणिका और कथ्य का असली मानी...!! हार्दिक अभिनन्दन। (15)

परशुराम पांडेय:- बड़े भाई धुरंधर जी!! आपकी क्षणिका हमारे लिए प्रज्वलित दीप है जो हमें ज्ञान -प्रकाश से प्रकाशित करती आ रही है और आगे भी यही अपेक्षा है।शुभ रात्रि।(16)

परिणीता मुखर्जी:-रामदेव जी, नमस्कार...आपकी लघु कथा पढ़कर मन को बहुत संतोष हुआ...कम से कम विदेश में रहकर मॉरिशस की खूशबू तो मिली। (17)

राजेश्वर वशिष्ठ:-आप भावनाओं के अंतिम छोर को पकड़ कर कितनी जीवंत रचना बुनते हैं। प्रणाम। आपका लेखन किसी देश का लेखन नहीं है, हिंदी भाषा का समृद्ध लेखन है। यह लेखन पूरी दुनिया में हिंदी का गौरव बढ़ा रहा है। प्रणाम। (18)

राकेश के. आर. पांडेय - आपकी लेखन शैली अनुपम है विचारों के सागर से मोती

चुनना आपकी विशिष्ट विशेषता है...मै आपके क्षणिका और लघु कथा को नियमित पढ़ता हूँ ...विषयवस्तु के मूल को सहजता पूर्ण व्यक्त करना मै आपसे सीखता हूँ..इस कथा के कथानक के अनुरूप शब्द और प्रस्फुटित भाव कथ्य को निर्बाध गति प्रदान करते हुए पाठक को अंत तक पढने हेतु बाध्य करता है...और निचोड़ भी सहजता पूर्वक प्रस्तुत कर देता है...सादर चरण स्पर्श। (19)

राज हीरामन - तुम लघुकथा सम्राट हो..(20)

राकेश के. आर. पांडेय:- आपकी लेखन शैली अनुपम है विचारों के सागर से मोती चुनना आपकी विशिष्ट विशेषता है...मै आपके क्षणिका और लघु कथा को नियमित पढ़ता हूँ ...विषयवस्तु के मूल को सहजता पूर्ण व्यक्त करना मै आपसे सीखता हूँ..इस कथा के कथानक के अनुरूप शब्द और प्रस्फुटित भाव कथ्य को निर्बाध गति प्रदान करते हुए पाठक को अंत तक पढने हेतु बाध्य करता है...और निचोड़ भी सहजता पूर्वक प्रस्तुत कर देता है...सादर चरण स्पर्श।(21)

शंकर क्षेम:- आपकी ये व्यंग्यमूलीय रचनायें विश्वपटल पर पहुँची। फेसबुक से ही संभव हुआ और हम आपके लेखन से परिचित हो सके यह
माँ सरस्वती की कृपा रही।(22)

श्रवण कुमार उर्मलिया:-नमस्कार, रामदेव भाई हिंदी के लिए आपका योगदान बहुत बड़ा है...यह हम सभी के लिए गर्व की बात है..इतिहास साक्षी रहेगा...शुभकामनाएं...(23)

सुशील मिश्र:- मान्यवर आपकी रचनाएँ बरबस खलील जिब्रान की याद दिला जाती हैं।फ़र्क बस इतना कि वे संदर्भ को विस्तार दे देते हैं और आप पूरी कहानी को क्षणिका में समेट देते हैं।जीवन दर्शन हर हाल में निहित होता है । नमन लेखनी को.... (24)

ठाकुर सुरेन्द सिंह:-मित्र वर आपकी गद्य- क्षणिकायें अद्वितीय हैं और इन्हें पुस्तक रूप देकर आप साहित्य के साथ साथ मानवता की भी बहुत बड़ी सेवा करेंगे । प्रतीक्षारत हूं पुस्तक के लिये ... अग्रिम वधाई एवं मंगलमयी शुभ कामनायें।(25)

उदय वीर सिंह:-सर्वप्रिय श्रध्येय धुरंधर जी, आप अग्रदूत हैं संस्कृति परंपरा मूल्य व प्रतिमानों के ..... ईश्वर आपको गतिमान स्वस्थ व प्रखरता नवाजे मेरी अरदास है।(26)

शंकर क्षेम :- प्रत्येक पात्र किसी विचार, मान्यता, मिथ, धारणा, अवधारणा आदि का प्रतिनिधि है।और यहाँ तक कि स्वयं रचनाकार भी। ऐसी विधा विश्व साहित्य में उपलब्ध हैं।इनमें रहस्यवादी जीवन दर्शन उपलब्ध रहता हैऔर संदेशात्मकता का पुट रहता है।

(27)

डा. जयप्रकाश कर्दम:- लघु कथा सम्राट की कलम से एक और बेहतरीन लघु कथा| बहुत बहुत बधाई धुरंधर जी| धुरंधर जी, भारत में बहुत लोग आपको चाहते हैं तथा आपको प्यार और सम्मान करते हैं| हिंदी की दुनियां आप पर गर्व करती है| प्रकाश पर्व पर आपको और आपके परिवार को बहुत बहुत हार्दिक मंगल कामनायें| (28)

मेरी पोस्ट की हुई लघु कथा:- नाक के नीचे -- 02 / 08 / 18 --- के संदर्भ में श्री गंगा पी डी शर्मा जी ने अपनी ओर से यह प्रतिक्रिया दी है। बहुत से लोगों ने इस पर लिखा है जो मेरा संबल बढ़ा रहा है। शर्मा जी की प्रतिक्रिया इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि इस में एक खास गूढ़ता निहित है। कृपया आप लोग पढें यथावत उन्हीं के मधुर गहन साहित्यिक शब्दों में। (29)

गंगा प्रसाद शर्मा- लघुकथा के कलेवर में एक वृहद कथा। रामदेव धुरंधर जी ने नीति,राजनीति,दर्शन और साहित्य के चतुष्टय को अपने प्रातिभ से केवल एकीकृत ही नहीं किया हैअपितु उसे अप्रतिम रूप भी दिया है। यहाँ नीतिगत राग भी है और विराग भी।कला का संरक्षण राजधर्म है और नीति का संरक्षण साहित्य और कला का।किंतु जब ये अपने-अपने धर्म भूल जाते हैं तो अनर्थ का हेतु बनते हैं।इस संदेश को बड़ी कुशलता से पाठक तक पहुँचाने में जिस भाषा और शैली का इस्तेमाल इस लघुकथा में हुआ है वह कौशल धुरंधर जी के मूलयांकन के समय खलील ज़िब्रान के क़द की ही याद नहीं दिलाता वरन उनके बरक्स खड़ा कर देता है। रचना की उत्कृष्टता के लिए मेधा के साथ-साथ लोक संपृक्ति भी अपेक्षित है,वह इस लघुकथाकार में भरपूर है।
अपनी मेधा और लोक संपृक्ति की संश्लिष्ट सारस्वत स्वाति विंदु से लघु कथा के सीप में मोती उपजाने वाले धुरंधर जी को हार्दिक बधाई।(29)

गंगा प्रसाद शर्मा:- आपकी की इंसानियत आपके बेहतर सृजन का हेतु है और आपका साहित्य इंसान से इंसान को जोड़ने का प्रमुख सेतु है। रामदेव धुरंधर बंधु, आप खुद भी भारत और मारीशस के मध्य एक सुगम सेतु हैं। हार्दिक बधाई बंधु!(30)

मॉरीशस से ... कुछ विचार, कुछ रस

पढ़ें 'नेशनल दुनिया' के आज (29 मार्च) के अंक में।

गद्य-क्षणिका

कुछ विचार, कुछ रस मॉरीशस से

रामदेव धुरंधर

1. चूक

तपस्वी ने थोड़ी उदारता की होती, तो आज संसार का हर प्राणी मानवता का शिखर होता। ईश्वर ने उस की तपस्या से खुश हो कर कहा था - जो मांगना है, मांग लो। उस ने सब के लिए मानवता मांगी थी, लेकिन चाहा था चाभी उस के पास रहे। उस ने जो मांगा उसे मिला। पर वह तो नश्वर था। उस के जाने के बाद चाभी अज्ञात रह गई।

2. अभागिन बेटियां

कहानियों में बहुत सुना, बेटियां धरती पर बेटों की तरह प्रिय न होने से मरीं, तो आकाश में तारे हो गईं। एक कहानी कुछ और कहती है। आकाश के एक तारे ने धरती पर बेटी बनने का अपना सपना पूरा किया। सगी मां के मरने पर उस की सौतेली मां हुई। सौतेली मां ने उस की जान इसलिए ली, क्योंकि उस की शादी सुखी घराने में होने वाली थी।

3. बाबुल की गलियां

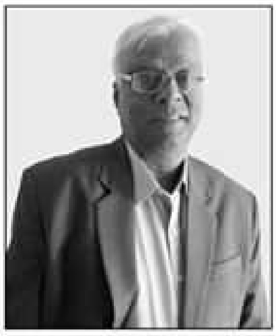

बहते आंसुओं के कारण उन का चेहरा धूमिल हो जाने से गायक की आंखें प्यासी रह गई थीं।

गायक के एक गीत से कन्याओं की आंखों में आंसू आ गए थे। बहते आंसुओं के कारण उन का चेहरा धूमिल हो जाने से गायक की आंखें प्यासी रह गई थीं। गायक ने इस गीत को फिर न गा कर जमीन में दफन कर दिया था। गायक आज बुढ़ापे में गूंगा हुआ, तो वह गीत धरती का सीना चीर कर बाहर आया और पनघट के पास महुआ पेड़ की डाल पर जा बैठा। कन्याएं उस से कह रही थीं - ऐ गीत, हम बाबुल की गलियां छोड़ जाएं, तब जरूर गाना।

4. नदी के तट

लड़का नदी के इस पार और लड़की उस पार रहती थी। दोनों सुबह एक-दूसरे को देखने की वि ?लता में नदी के किनारे आ कर पांव धोते थे। हवा में विचरने वाले कवि को उन पर प्रेम कविता लिखनी थी। वह मौके की तलाश में था। कभी तो दोनों प्रकृति प्रदत्त नदी के तट पर प्रेम करते।

बाद में दोनों की शादी हो गई। कवि अब भी हवा में विचरता था। पर प्रेम कविता के लिए उसे आधार तो मिला नहीं। अब कवि को इस की उम्मीद रहती भी नहीं। हवा का अंग होने से वह हवा में ही सवार हो कर कहीं और के लिए चला गया।

'लेखक मॉरीशस के प्रसिद्ध रचनाकार और विचारक हैं।'

शशिकांत गीते:- मैं श्री रामदेव धुरंधर जी का युवावस्था के आरंभ से पाठक हूँ। वे दूर देश मॉरीशस से हिंदी की अलख जगाये हैं। भला हो फेसबुक का अन्यथा मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि अपने प्रिय धुरंधर रचनाकार से संवाद बन पायेगा और आत्मीयता हांसिल हो सकेगी। पिछले दिनों उन्हें छूने, बतियाने और रूबरू आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मेरे हाथ से फिसल गया। वे आये और मैं भोपाल में नहीं था। शायद भाग्य में हो तो फिर अवसर मिले। चाहूंगा कि वहीं से आशीष मिलता रहे। सादर आभार सर।(31)

कृष्णलता सिंह:- आदर्श एवं संस्कार माता पिता से ही मिलते है, यह सत्य सब जान और समझ ले, तो समाज का बहुत कल्याण हो सकताहै। श्रम विहीन धन पतन की ओर ले जाता है ।क्षणिका इस उद्देश्य को देने में सार्थक है ।बधाई ,आप यूँ ही नहीं धुरंधर कहलाते है।(32)

कृतवर्धन अग्रवाल ---   कुछ विशेष है आपके लेखन में,
यूँ ही तो कोई धुरन्धर नहीं बनता।
करना पडता है स्वाहा स्व को, राष्ट्रहित मे,
यूँ ही तो कोई देव, राम नही बनता।(33)

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि श्री रामदेव धुरंधर जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अंतर्गत जन्म, शिक्षा, विवाह और पारिवारिक पृष्ठभूमि को बयां किया है। मॉरीशस के जाने माने प्रतिष्ठित लेखक है। इनका बचपन बहुत गरीबी में व्यतीत हुआ है। जो सम्मान्य परिवार से आते है। आज साहित्य के क्षेत्र में कई विधाओं पर कार्य किया है। वही साहित्यिक रचना की दृष्टि से देखे तो नाटक, कहानी, उपन्यास और गद्य क्षणिका लिखा है और इन्हें कई सम्मान से सम्मानित भी किया गया है। आज राही रैंकिंग के आधार पर 33वें नंबर है। जिस धारा प्रवाह के रूप में श्री रामदेव धुरंधर को पाता हूँ। शायद और कोई मेरे नज़र में नहीं है। ऐसे लेखक के बारें में चर्चा करना मेरा सुभाग्य है। मैं उनकी एक रचना पर प्रकाश डालना चाहता हूँ। वह रचना है पथरीला सोना जो छः खंडों में विभाजित है। अभी सातवा खंड प्रकाशाधिन है। इस उपन्यास को द्वय संपादकीय पुस्तक के रूप में कार्य किया हूँ इसका शीर्षक है 'भारतीय संस्कृति के उन्नयन में प्रवासी साहित्यकार' और दूसरी पुस्तक रामदेव धुरंधर कृत पथरीला सोना में भारतीय मजदूरों और उनकी संतानों का यथार्थ चित्रण। जो कि बहुत चर्चित पुस्तक है। रामदेव धुरंधर जी के रचनाओं का सामान्य परिचय दिया हूँ। इस प्रकार श्री रामदेव धुरंधर जी के साहित्य की दृष्टि से सींचा हूँ। इस लिए रामदेव धुरंधर जी के साहित्य को और अधिक पढ़ने और सीखने की जरूरत है।

संदर्भ सूची:-

1. Hindisamay.com Https://www.hindisamay.com

2. Hindisamay.com Https://www.hindisamay.com

3. वही

4.. वही

5.. वही

6.. वही

7.. वही

8.. वही

9.. वही

10.. वही

11.. वही

12.. वही

13.. वही

14.. वही

15.. वही

16.. वही

17.. वही

18.. वही

19.. वही

20.. वही

21.. वही

22.. वही

23.. वही

24.. वही

25.. वही

26.. वही

27.. वही

28.. वही

29.. वही

30.. वही

31.. वही

32.. वही

33.. वही